वर्ष 44 अंक 7 जुलाई 2017

₹ 15/-

हँसती दुनिया

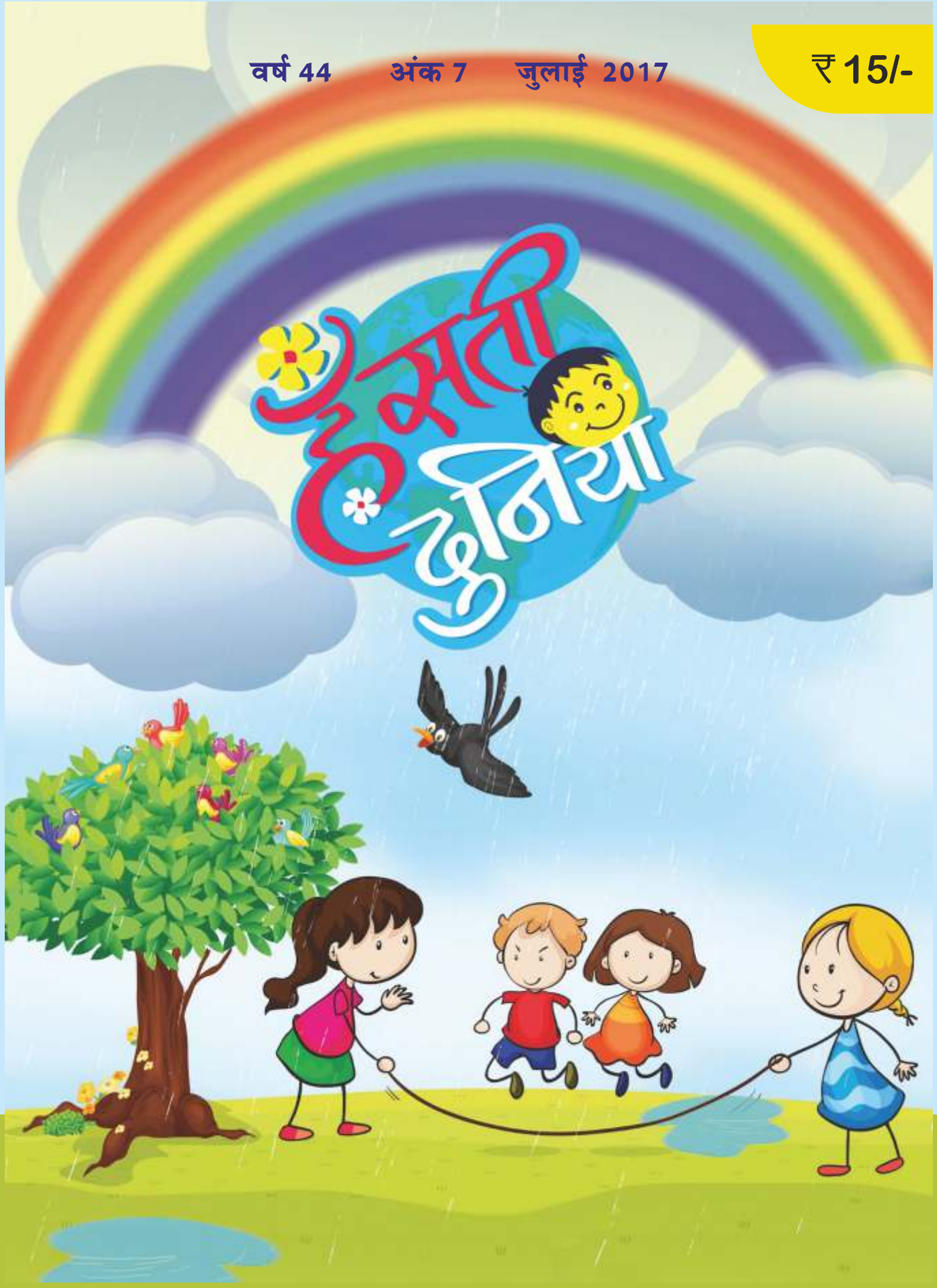

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 07 ● जुलाई 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
17. समाचार
20. वर्ग पहेली
24. कभी न भूलो
42. गुदड़ी के लाल
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

13. दादा जी
34. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

कहानियां

10. बरसात का मौसम
: प्रमीला गुप्ता

18. बन्दर की चतुराई
: किशोर डैनियल

21. जम्बो को सीख मिली
: बद्री प्रसाद वर्मा

31. खरगोश की समझदारी
: राजकुमार जैन 'राजन'

47. विनम्रता की ताकत
: दिनेश दर्पण

कविताएं

19. बारिश
: मंजू दवे

23. घिर आये बादल
: कल्पनाथ सिंह

29. आमों का रस
: राजकुमार जैन 'राजन'

29. आम का बोर
: सुरेन्द्र रंधावा

33. बादल आये
: हरजीत निषाद

41. इन्द्रधनुषी छटा सुहानी
: गफूर स्नेही

विशेष / लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के पावन वचन

7. सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

25. खूबसूरत घोंसला
: कमल जैन

26. अजब अनोखे टॉवर
: किरण बाला

28. नीलकण्ठ ...
: विद्या प्रकाश

30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

38. कस्तूरी मृग
: डॉ. परशुराम शुक्ल

46. कहाँ से आते हैं ...
: अर्चना जैन

पहले स्वयं अपनाएं

अध्यापक ने कक्षा में प्रवेश करते ही विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और पूछा– मैंने तुम सबको क्रोध न करने के बारे में समझाया था कि क्रोध मानव के लिए हानिकारक है। क्रोध या गुस्सा ऐसी भावना है जिससे हृदय की गति बढ़ जाती है, रक्तचाप बढ़ जाता है। क्रोध के कारण मानव का व्यवहार बदल जाता है इसलिए क्रोध को हमेशा अपने वश में रखना चाहिए। क्या आप सबने इस पर अमल किया?

बच्चों की तरफ से सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर अध्यापक ने कठोर स्वर में कहा कि क्रोध न करने के बारे में मैंने जो कुछ कहा था उसका पालन तुम सबने किया या नहीं उत्तर दो।

हर एक से पूछने पर पता चला कि कोई भी विद्यार्थी अध्यापक की बात पर अमल नहीं कर पाया था। यह जानकर अध्यापक का गुस्सा और बढ़ना स्वाभाविक था। उन्होंने क्रोध न करने से सम्बन्धित वही बातें फिर से दोहराई कि हमें क्रोध क्यों नहीं करना चाहिए? हमें अच्छे शब्दों का प्रयोग क्यों करना चाहिए? परन्तु आजकल इन बातों को कोई मानता ही नहीं।

अध्यापक ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा– मैंने आपको क्रोध न करने की शिक्षा दी परन्तु यह बात मैंने कहते, समझाते हुए स्वयं क्रोध किया और अपनी वाणी पर संयम भी नहीं रख पाया। अगर यही बात मैंने आपको प्यार से समझाई होती तो शायद इसका असर आप पर अवश्य ही पड़ता।

आज विचार करने का विषय यह है कि हमारे प्यार से समझाने पर भी हमारी बात को कोई क्यों नहीं समझ पाता। कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारा सारा ध्यान दूसरे को समझाने और सुधारने पर लगा रहता है। हमारा प्रयोजन और नीयत अपने खुद के सुधार पर न होकर दूसरे के सुधार पर होती है। हमारे शब्द और वाणी दोनों ही दूसरों को समझाने से अधिक दूसरों को नीचा दिखाने में अधिक प्रयोग होते हैं। हम स्वयं दूसरों की नज़र में ऊँचा उठने का प्रयत्न करते हैं और अपने कर्म को श्रेष्ठ दिखलाने की प्रक्रिया का हिस्सा बन जाते हैं। यही कारण है कि हमारी बात का असर दूसरों पर नहीं होता।

जब हम फसल उगाते हैं तो अच्छी मिट्टी में उपयोगी खाद और पानी भी देते हैं परन्तु यदि हम खारा पानी डालकर सिंचाई करें तो फसल को हानि पहुँचती है। अगर हमारा समझाने का भाव शुद्ध है, नीयत भी शुद्ध है परन्तु भाषा शुद्ध नहीं है तो वह भी हानिकारक सिद्ध होती है।

आज आवश्यकता है कि किसी को कुछ भी समझाने से पहले यह बात जरूरी है कि नीयत, प्रयोजन, लक्ष्य तथा आकांक्षा शुद्ध और स्वस्थ हो और साथ–साथ उसमें सकारात्मक ऊर्जा, ओज और शक्ति की गहराई का समावेश हो। इन सभी को जो स्वयं जीवन में अपने ऊपर प्रयोग करेगा उसकी हर बात का अनुकरण अवश्य ही किया जाता रहेगा।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 154

रब नूं हाज़र नाज़र तकणा इस तों वड्डा धर्म नहीं।
साधजनां दी सेवा बाझों चंगा कोई कर्म नहीं।
जो सन्तां दी सेवा अन्दर तन मन धन लगांदा ए।
मन दी मैल असल विच अपणी समझो धोई जांदा ए।
सत्गुर दे उपदेश तों वड्डी होंदी कोई बाणी नहीं।
मन अपणे नूं भेंट चढ़ाणा इस तों वध कुर्बानी नहीं।
जित्थे बह के रब न भुल्ले वड्डी थां वड्डा अस्थान।
वड्डी भगती ओहनू कहन्दे सत्गुर जो कर लए परवान।
एहनां गल्लां दा जो बंदा अमलीं करदा ऐ परचार।
कहे अवतार उन्हां तों जावां सौ सौ वारी मैं बलिहार।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा हम सभी के अंग–संग मौजूद है, यह हमसे दूर नहीं है। इस प्रभु को अंग–संग मौजूद देखने से बड़ा कोई धर्म नहीं है और साधुजनों की सेवा करने से बढ़कर अन्य कोई अच्छा कर्म नहीं है। जो सन्तों की सेवा में अपना तन, मन, धन लगाता है, समझो वह असल में अपने मन की मैल को धोता जाता है। संसार में अनेक उपदेश, अनेक बाणियां हैं लेकिन सद्गुरु के उपदेश से ऊँची कोई अन्य बाणी, कोई अन्य उपदेश नहीं है। संसार में अनेक प्रकार के तप–त्याग और कुर्बानियों के उदाहरण हैं लेकिन गुरु–चरणों में अपने मन को भेंट करने से बढ़कर कोई और कुर्बानी नहीं है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान पवित्र स्थानों की यात्राएं करके खुशी पाना चाहता है लेकिन उसे याद रखना चाहिए कि जिस स्थान पर बैठकर परमात्मा की याद न भूले वही स्थान सबसे बड़ा है। इन्सान भक्ति के लिए कितने ही तरीके, कितने ही साधन अपनाता है लेकिन उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि जिसे सद्गुरु परवान करे, वही भक्ति सबसे बड़ी और महान है।

बाबा अवतार सिंह जी भक्त और भक्ति के लिए उपरोक्त बातों को आवश्यक और उपयोगी बताते हुए कहते हैं कि ऊपर बताई गई बातों को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप में अपनाकर जो मानव सत्य का प्रचार करता है, मैं उसके ऊपर सौ–सौ बार बलिहार जाता हूँ।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के पावन वचन

- ✯ निरंकार–प्रभु से नाता जोड़ो, इसी से सुख प्राप्त होते हैं।
- ✯ सेवा में ज़ज़्बा देखा जाता है। सामर्थ्य नहीं।
- ✯ भक्ति का अर्थ है– सम्पूर्ण समर्पण।
- ✯ अहिंसा के भाव से ही मानवता का बचाव होगा।
- ✯ सहनशीलता–भक्तिमय आचरण का प्रतीक है।
- ✯ मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।
- ✯ ज्ञान उजाला है और अज्ञान अंधकार।
- ✯ मानव प्रभु की उत्तम रचना है। इसका रूतबा बनाये रखना है।
- ✯ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।
- ✯ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।
- ✯ न बैर की न तकरार की, आज है जरूरत प्यार की।
- ✯ जब मन निर्मल हो गया तो जीवन भी निर्मल हो जायेगा।
- ✯ जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं उनमें ही पवित्रता है पावनता है।
- ✯ हमेशा विनम्रता, प्यार, करुणा और दया के भाव से युक्त रहना चाहिए।
- ✯ मन में यही शुकराने का भाव हमेशा बना रहे कि मालिक तेरी कृपा है जो तूने सब कुछ दिया है न दिया होता तो मैं आगे देने वाला कौन हूँ?
- ✯ भक्त सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हुए इस जीवन की यात्रा को तय करता है। अपना उद्धार करता है और औरों का कल्याण भी।
- ✯ भक्त और भक्ति की महत्ता हर युग में रही है।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य-वचन

भक्त हमेशा इस प्रभु के रंग में रंगा रहता है और दूसरों को भी इसी रंग में रंगता है क्योंकि वह जानता है कि दुनिया के रंग अगर हमारे ऊपर आ गए तो इन रंगों के साथ नफ़रत, ईर्ष्या, अहंकार ये सब रंग भी हम पर लग जाएंगे, जिनसे से हर व्यक्ति का बहुत नुकसान होता है।

महापुरुषों के वचन सुनते हैं और अगर हम महापुरुषों के वचनों पर अमल करते हैं तो हमारा जीवन ऊंचाइयों की तरफ जाता है। अगर हम उन वचनों पर अमल करने के बदले उनको ऐसे ही छोड़ दें। सत्संग में आकर अपनी मनमर्जी करें तो उस व्यक्ति का जीवन हमेशा गिरावट की तरफ जाएगा।

साधु–सन्तों ने तो हमेशा प्रीत, प्यार, नम्रता, भाईचारे, इन्सानियत का सबक ही सिखाया और जिन महापुरुषों ने, जिन भक्तों ने इनको सिर्फ सुना ही नहीं बल्कि उसे अपनी जिन्दगी में ढाल लिया, अपनी जिंदगी का अंग बना लिया उन्हीं का कल्याण होता है।

लोग अक्सर कहते हैं कि दुनिया खराब है। दुनिया में सिर्फ दो–चार लोग तो नहीं है, इसमें हम सब हैं परन्तु चलो मान लिया दुनिया खराब है पर तुम्हें एक अच्छा इन्सान होने से कौन रोक रहा है? एक नेकी के रास्ते पर चलने से कौन रोक रहा है? अच्छाईयां करने से कौन रोक रहा है?

सन्त के कर्म ही उसके जीवन की पहचान होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सिर्फ यह कह देना ही काफी नहीं है कि हमें अहंकार से दूर रहना चाहिए, निंदा, नफ़रत नहीं करनी चाहिए। जब तक इनको हम अमल में नहीं लाते, यह सिर्फ खोखले शब्द ही रह जाते हैं।

ज्यों–ज्यों हम संगत करते हैं, हमारे अन्दर भक्ति, प्रीत–प्यार की आदत आती है। जब यह आदत आती है तो फिर हमारा स्वभाव ही बन जाता है। फिर हमें कोई मुश्किल हो तो हम कतराते नहीं हैं, हम कभी घबराते नहीं हैं क्योंकि हम निरंकार के साथ पूरी तरह जुड़ चुके होते हैं।

–संग्रहकर्ता : श्रीराम प्रजापति

पत्रिका प्रसार अभियान मांगे सबका योगदान

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज के पावन आशीर्वाद से मिशन का सत्य संदेश सम्पूर्ण विश्व में फैल रहा है। आपको विदित है कि आरम्भ से ही हमारी पत्र–पत्रिकाएं मिशन के प्रचार–प्रसार का महत्वपूर्ण साधन रही हैं।

निरंकारी पत्र–पत्रिकाएं (हँसती दुनिया, सन्त निरंकारी, एक नज़र) गुणवत्ता के साथ मिशन का सन्देश जन साधारण तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम हैं। इनकी सदस्यता बढ़ाने और इन्हें पढ़ने के प्रति सभी में रुचि जाग्रत करने की दिशा में पर्याप्त प्रयास किये जाने चाहिएं।

निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं के सदस्य भले ही निरंतर बढ़ रहे हैं परन्तु फिर भी निरंकारी जगत की बहुसंख्या को ध्यान में रखते हुए बहुत से महापुरुष अभी भी इनके सदस्य नहीं बने हैं। इसके लिए विश्वभर में मिशन की सभी ब्रांचों के प्रबन्धकों, प्रचारकों अथवा महापुरुषों के भरपूर सहयोग की आवश्यकता है। इन्हें जन–जन तक पहुँचाने के लिए अनिवार्य है कि–

- ✯ प्रत्येक महापुरुष मिशन की तीनों पत्रिकाएं अपने घर में लगवाएं। इन्हें स्वयं भी पढ़े और औरों को भी पढ़ाएं।
- ✯ प्रत्येक महापुरुष अपने पारिवारिक, सामाजिक, कारोबारी दायरे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरणा देकर पत्रिकाएं लगवाएं। पत्रिका की सदस्यता किसी को उपहार रूप में भी दी जा सकती है।
- ✯ प्रबन्धक, प्रचारक स्थानीय स्कूल–कालेज व पुस्तकालयों, जनसाधारण आदि से सम्पर्क करके वहाँ पत्रिकाएं लगवाएं।
- ✯ अब पत्र–पत्रिकाओं की सदस्यता राशि एक वर्ष के लिए 150 रुपये तथा पांच वर्ष के लिए 700 रुपये है। पत्र–पत्रिकाओं की माया जमा कराने हेतु सभी ब्रांचों में रसीद बुकें उपलब्ध कराई गई हैं, वहाँ पर सदस्यता की माया जमा करा सकते हैं। इसके साथ ही सदस्यता फार्म भी जमा करा दें जिसमें पता, मोबाइल नं. आदि अवश्य लिखें।
- ✯ जन्मदिन, शादी की सालगिरह, उद्घाटन, गृहप्रवेश, पदोन्नति, श्रद्धांजलि समारोह आदि के अवसर पर पत्र–पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने हेतु प्रेरणा देकर भी सक्रिय योगदान दिया जा सकता है।
- ✯ प्रचारक महात्मा प्रचार के दौरान पत्रिका की रसीद बुक भी साथ रखें तथा पत्र–पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रेरणा देते रहें।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज का ध्यान है कि पत्र–पत्रिकाओं के इस महत्वपूर्ण माध्यम द्वारा पूरे विश्व को मिशन के साथ जोड़ा जाए, इसीलिए हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम पत्र–पत्रिकाओं को आवश्यक महत्व देते हुए अपनी सेवाएं प्रस्तुत करें। सद्गुरु माता जी ने सन्त निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने की रुचि जाग्रत करने के साथ–साथ इनकी सदस्यता बढ़ाने का आह्वान किया है। मिशन की पत्र–पत्रिकाएं जहाँ–जहाँ तक भी पहुँचेंगी, मिशन का संदेश भी स्वतः वहाँ पहुँचेगा। इस विषय में सद्गुरु माता जी ने आशीर्वाद दिया है कि सभी जोनल इंचार्ज/संयोजक/मुखी समय–समय

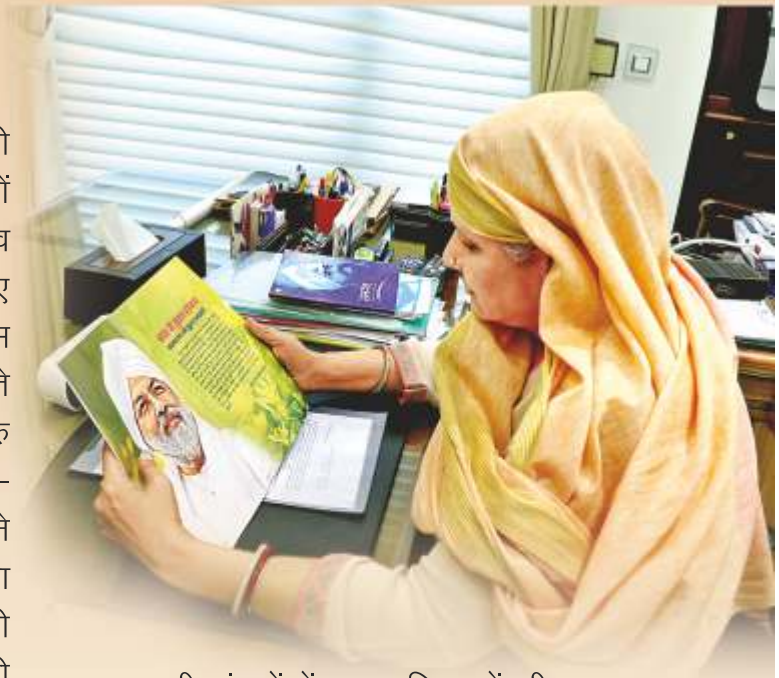

पर अपनी संगतों में पत्र–पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने तथा पढ़ने की रुचि जाग्रत करने संबंधित प्रेरणादायक घोषणा भी करते रहें।

– सी. एल. गुलाटी,
प्रभारी, पत्रिका विभाग

सद्वाक्य

- ✯ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का पूर्ण विकास।
- ✯ क्रोध मनुष्य की उन्नति में बाधक है।
- ✯ क्रोध मनुष्य के विवेक को समाप्त कर देता है।
- ✯ जो दूसरों का कार्य साधे वही साधक है।
- ✯ जो दूसरों के दुख में द्रवित हो वही सन्त होता है।
- ✯ माता–पिता कभी सन्तान का बुरा नहीं चाहते इसलिए उनके इरादों की कद्र करनी चाहिए।
- ✯ सोच–समझकर बोलें, आपका वार्तालाप आपकी छवि बनाने और बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ✯ किसी को पीड़ा पहुँचाना एक पेड़ को कुछ क्षणों में काटने के समान बहुत आसान–सा कार्य है लेकिन किसी को सुखी करने के लिए एक पेड़ लगाने के समान धैर्य, समय और सतर्क होकर देखभाल करने की आवश्यकता होती है।
- ✯ भाग्य कुछ भी नहीं कर सकता है यह तो केवल कल्पना है।
- ✯ धरती के सारे खजाने भी एक खोया हुआ क्षण वापस नहीं ला सकते।
- ✯ सत्य से कमाया गया धन हर प्रकार के सुख देता है। छल व कपट से कमाया धन दुख ही दुख देता है।

प्रस्तुति : प्रतीक्षा कुशवाहा

कहानी : प्रमीला गुप्ता

बरसात का मौसम

बरसात शुरू होते ही कंटकवन में हैजा, मलेरिया, डेंगू जैसी जानलेवा बीमारियां फैलने लगती थी। कोई भी घर इन बीमारियों से अछूता नहीं बचता था। इस बार तो राजा शेरसिंह की पत्नी को ही कई दिनों से तेज़ बुखार आ रहा था। कंटकवन के वैद्यजी ने सारे नुस्खे आजमा लिए थे। हारकर शेरसिंह ने शहर के मशहूर डॉक्टर ब्रेडी भालू को एक महीने के लिए कंटकवन की डिस्पेन्सरी में बुला लिया। शेरसिंह ने डॉ. ब्रेडी को बताया कि हर साल बरसात के मौसम में पूरा कंटकवन बीमारियों की चपेट में आ जाता था। उसने डॉक्टर से पूछा– ''डॉक्टर साहब, क्या इन बीमारियों से बचने का कोई तरीका नहीं है?''

डॉ. ब्रेडी ने पहले तो शेरसिंह की पत्नी को देखकर दवाई दी। फिर कहा– कल वन का दौरा करने के बाद ही इन बीमारियों का कारण और उनसे बचने का तरीका बता पाऊँगा।

ब्रेडी भालू ने वन का दौरा किया। देखा कि घरों के सामने नालियों में गंदा पानी जमा था। मच्छर भिनभिना रहे थे। जगह–जगह गड्ढों में भी बरसात का पानी भरा था। सबके घरों के आगे कूड़े–कचरे का ढेर लगा हुआ था। बदबू के कारण डॉ. ब्रेडी का सिर भन्नाने लगा था। यह सब देखने के बाद डॉ. ब्रेडी ने शेरसिंह को डिस्पेन्सरी में बुलाया और कहा– शेरसिंह जी, बीमारियों का कारण कंटकवन में चारों ओर फैली गंदगी, नालियों और गड्ढों में जमा गंदा पानी है। जब तक वन में रहने वालों को सफाई रखने की आदत नहीं पड़ेगी तब तक इन बीमारियों से छुटकारा मिलना मुश्किल है।

–इसके लिए हमें क्या करना होगा– शेरसिंह ने पूछा।

–मैं एक महीना यहाँ पर हूँ। देखता हूँ कि यहाँ पर साफ–सफाई का इंतजाम कैसे किया जाये।– डॉ. ब्रेडी ने जवाब दिया।

नीकू खरगोश की मां भी कई दिनों से बीमार थी। घर में सभी परेशान थे। डिस्पेन्सरी में दवाई लेने के लिए आया था। डॉ. ब्रेडी और शेरसिंह की बातें सुनकर बोला– डॉ. अंकल, आजकल

स्कूल बंद हैं। क्या हम बच्चे आपकी मदद कर सकते हैं?

—अरे वाह! अगर कंटकवन के बच्चे सफाई के काम में मदद करेंगे तो यह काम बड़ी आसानी से हो जाएगा। बच्चे खेल—खेल में सफाई कर देंगे, उनको देखकर बड़े भी साफ—सुथरा रहना सीख जाएंगे।— डॉ. ब्रेडी ने खुश होकर कहा।

मैं अभी अपने सब दोस्तों को लेकर आता हूँ। आप हमें बताते रहें कि क्या करना है, बाकी का काम हम कर लेंगे।— नीकू जोश में भरकर बोला।

—हाँ, हाँ क्यों नहीं?

शेरसिंह ने भी कहा— इस काम के लिए मैं भी हर तरह से आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ।

अगली सुबह आठ बजे ही नीकू खरगोश अपने दोस्तों जम्पी बन्दर, व्हाइटी बिल्ली, मोंटू सियार और बहुत सारे दूसरे बच्चों के साथ डॉ. ब्रेडी के पास जा पहुँचा। डॉ. ब्रेडी ने बताया— सफाई की शुरुआत घर के आसपास की नालियों, गड्ढों में जमा पानी को बाहर निकालने से करनी होगी। पानी निकालकर पहले उनको अच्छी तरह से साफ करेंगे, उसके बाद उनमें मच्छरों को मारने वाली दवाई का छिड़काव करेंगे।

नीकू खरगोश अपने दोस्तों और दूसरे बच्चों के साथ नालियां और गड्ढों की सफाई करने में जुट गया। बच्चों को यह काम करते देखकर कुछ बड़े लोग भी उनकी मदद करने लगे। एक हफ्ते में ही पूरे कंटकवन की नालियां साफ—सुथरी हो गयी, गड्ढों में से पानी निकालकर उनको अच्छी तरह से भर दिया गया। बच्चों को तो यह सब काम करने में बहुत मज़ा आ रहा था।

एक हफ्ते के बाद डॉ. ब्रेडी ने वन का दोबारा दौरा किया। नीकू खरगोश और उसके साथियों का काम देखकर बहुत खुश हुए। सभी बच्चों की

बहुत तारीफ की। कहने लगे– ''बच्चों तुमने तो सचमुच कमाल कर दिया है। अब अगला काम है घरों के आगे जमा कूड़े–कचरे की सफाई। यही नहीं, सबको समझाना होगा कि घर के बाहर अथवा सड़क पर कूड़ा–कचरा न फेंकें।''

''लेकिन डॉ. साहब, फिर कूड़े–कचरे को कहाँ पर रखेंगे?'' जम्पी बन्दर ने पूछा।

''शेरसिंह जी ने शहर से कूड़ेदान मंगवा दिये हैं। सफाई करने के बाद हर घर के आगे कूड़ेदान रख दिया जाएगा। उसी में कूड़ा डालना होगा। हर तीसरे दिन बड़ी गाड़ी आकर कूड़ेदानों का कूड़ा इकट्ठा कर कंटकवन से बाहर कूड़े के लिए बनी खास जगह पर डाल आएगी।'' डॉ. ब्रेडी ने बच्चों को समझाया।

नीकू और उसके साथियों ने यह काम भी बड़ी फुर्ती से एक हफ्ते में पूरा कर दिया। हर घर में जाकर बता दिया। आगे से कूड़ा–कचरा कूड़ेदान में ही डालना। इधर–उधर फेंकोगे तो ठीक नहीं होगा।

कंटकवन का तो कायाकल्प हो गया। एकदम साफ–सुथरा दिखाई देने लगा था। डॉ. ब्रेडी और शेरसिंह को यह उम्मीद नहीं थी कि यह काम इतनी जल्दी हो जाएगा। लेकिन बच्चों ने कर दिखाया था। धीरे–धीरे कंटकवन में मरीजों की संख्या भी कम होने लगी थी।

नीकू खरगोश और उसके साथियों को तो यह सब करने में बहुत आनन्द आ रहा था। जिधर से गुजरते लोग उनके काम की तारीफ करते। सबके माता–पिता भी खुश थे कि छुट्टियों में इधर–उधर न घूमकर बच्चों ने उन सबको बीमारियों से राहत दिला दी थी। सफाई का काम पूरा होने वाला था। दस दिन के बाद डॉ. ब्रेडी भी वापिस शहर जाने वाले थे। बच्चे यह सोच–सोचकर उदास थे कि डॉ. ब्रेडी के वापिस जाने के बाद वे सब क्या करेंगे। डॉ. ब्रेडी के पास जाकर बोले– डॉ. साहब, सफाई अभियान तो पूरा होने वाला है, दस दिनों के बाद आप भी चले जाएंगे। आपके जाने के बाद तो हम सब बोर हो जाएंगे।

''बच्चो, सफाई अभियान कभी खत्म नहीं होता। तुमको शायद यह नहीं मालूम कि सारा कचरा बेकार नहीं होता है। कुछ कचरा ऐसा भी होता है जिससे सुन्दर वस्तुएं बनाई जा सकती हैं। इन दस दिनों में मैं तुमको सुन्दर–सुन्दर चीजें बनानी सिखाऊँगा।''– डॉ. साहब ने बताया।

डॉ. ब्रेडी केवल डॉक्टर ही नहीं थे बल्कि एक कुशल शिल्पकार भी थे। उन्होंने नीकू और कंटकवन के बच्चों को रद्दी कागज़ से दोबारा कागज़ बनाना, बेकार के स्लिपरों, जुराबों, प्लास्टिक के खाली डिब्बों से सुन्दर–सुन्दर चीजें बनानी सीखा दीं। टीन के, गत्ते के खाली डिब्बों से पक्षियों का घोंसला, उनका चुग्गा रखने के लिए बर्तन बनाना सिखाया। जब डॉ. ब्रेडी वापिस जा रहे थे तो पूरा कंटकवन उदास था। उन्होंने न केवल कंटकवन को बीमारियों से छुटकारा दिलवा दिया था बल्कि सुन्दर–सुन्दर चीजें बनाकर बच्चों का मन भी जीत लिया था।

डॉ. ब्रेडी ने बच्चों से कहा– मैं जा रहा हूँ, मुझे उम्मीद है कि तुम अपने इस सफाई अभियान को हमेशा जारी रखोगे।

डॉ. ब्रेडी के जाने के बाद नीकू खरगोश ने सभी बच्चों के साथ मिलकर कंटकवन में 'क्राफ्ट क्लब' बनाया। इसमें वे बेकार फालतू कचरे और सामान से सुन्दर उपयोगी वस्तुएं बनाते और शहर में जाकर उनकी प्रदर्शनी लगाते। वहाँ पर लोग उनको अच्छे मूल्य पर खरीदते थे। इससे जो धन इकट्ठा होता उससे वे सब मिलकर दूसरी जगहों पर जाकर अपना 'सफाई अभियान' चलाते।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
-अजय कालड़ा

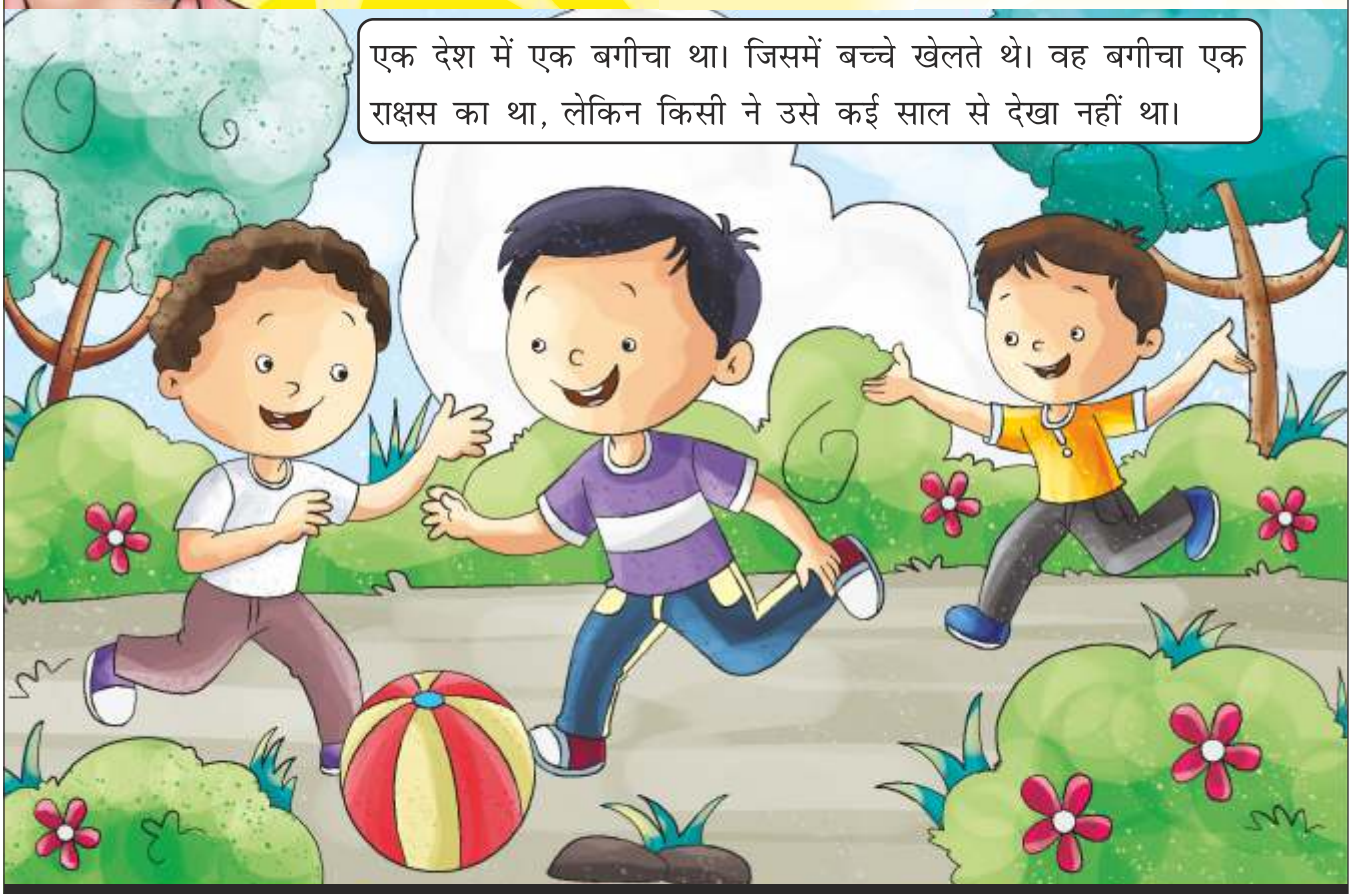

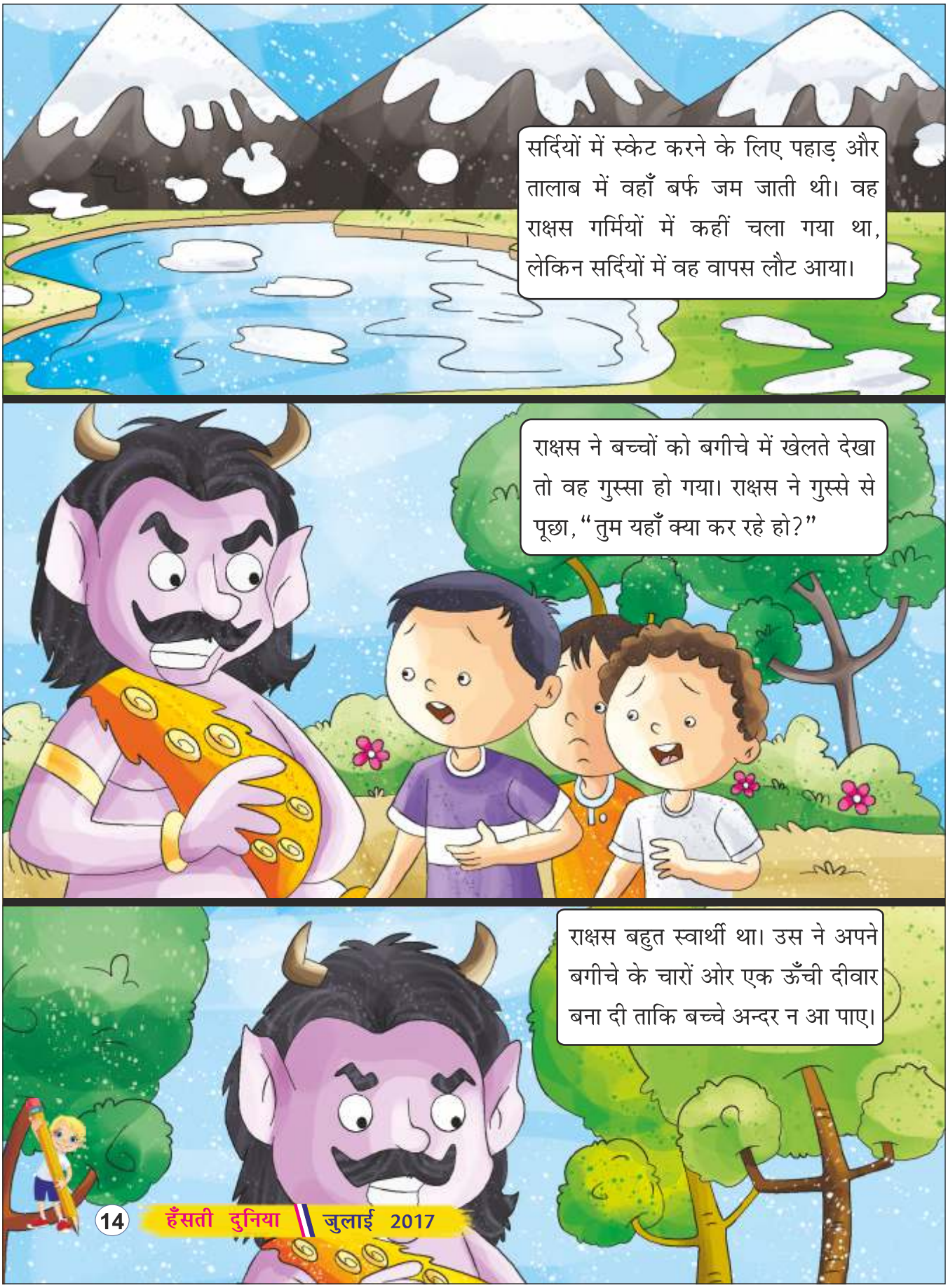
सर्दियों में स्केट करने के लिए पहाड़ और तालाब में वहाँ बर्फ जम जाती थी। वह राक्षस गर्मियों में कहीं चला गया था, लेकिन सर्दियों में वह वापस लौट आया।
राक्षस ने बच्चों को बगीचे में खेलते देखा तो वह गुस्सा हो गया। राक्षस ने गुस्से से पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"
राक्षस बहुत स्वार्थी था। उस ने अपने बगीचे के चारों ओर एक ऊँची दीवार बना दी ताकि बच्चे अन्दर न आ पाए।

उसने वहाँ एक सूचनापट्ट भी लगा दिया– 'यहाँ आने वाले को दंडित किया जाएगा।'
'यहाँ आने वाले को दंडित किया जाएगा।'
वसंत आ गया था, देश भर में फूल खिल रहे थे और पक्षी गाना गा रहे थे। लेकिन राक्षस के बगीचे में अभी भी सर्दी थी।
हर दिन राक्षस अपनी खिड़की से बाहर देखता और वसंत के आने की प्रतीक्षा करता था।

लेकिन एक सुबह राक्षस उठा तो उसने एक संगीत सुना, जो कि रोबिन (पक्षी) गा रहा था।

राक्षस ने अपनी खिड़की से देखा तो वसंत उसके बगीचे में लौट आया था।
अब स्वार्थी राक्षस बहुत खुश था। फिर उसके कानों में बच्चों की आवाज़ सुनाई पड़ी।
बच्चे दीवार में बने छेद से अन्दर घुस आए थे और पेड़-पौधे इतने ज्यादा खुश थे कि वे हरे-भरे हो गए थे।

जब राक्षस ने बच्चों को बगीचे में खेलते हुए देखा तो वह खुश हुआ, वह जानता था कि वसंत उनकी वजह से आया था। अब उसने बच्चों को बगीचे में आकर खेलने की इज़ाजत दे दी। वह जान चुका था कि बच्चों की किलकारियों और पक्षियों की चहचहाट से ही प्रकृति खुश होती है।

ब्रह्मांड के जन्म के पीछे है 'बिग बाउंस'

लंदन। एक नये अध्ययन के अनुसार यह संभव है कि पहले से मौजूद ब्रह्मांड के विखंडन से हमारा ब्रह्मांड अस्तित्व में आया होगा।

यह अवधारणा उस सिद्धांत के विपरीत है कि एक बिन्दु के प्रसार के साथ हमारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई होगी। नई अवधारणा से 'बिग बाउंस' सिद्धांत को बल मिलता है जो हमारे ब्रह्मांड के जन्म के बारे में बतलाता है। अभी ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है और ऐसी मान्यता है कि बिग बैंग के बाद यह अस्तित्व में आया था। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि ब्रह्मांड में विस्तार और संकुचन की प्रक्रिया चलती रहती है और मौजूदा विस्तार इसका एक चरण मात्र है। कथित 'बिग बाउंस' का सिद्धांत वर्ष 1922 से है लेकिन उचित विवेचना करने में असमर्थ होने के कारण इसको लेकर सवाल उठते रहे हैं। इस अध्ययन का प्रकाशन 'फिजिकल रिव्यू लेट्र्स' में किया गया है। (भाषा)

हमारा सबसे प्राचीन पूर्वज है एक बैगनुमा समुद्री जीव

बीजिंग। अनुसंधानकर्ताओं ने इंसानों के सबसे पुराने ऐतिहासिक पूर्वज के अस्तित्व संबंधी जानकारी खोज निकालने का दावा किया है। उनका कहना है कि चीन में पाए जाने वाला यह सूक्ष्म, बैगनुमा समुद्री जीव 54 करोड़ साल पहले हुआ करता था।

इस जीव का नाम सैकोराइटस है। यह नाम इसके दीर्घवृत्ताकार शरीर एवं बड़े मुँह से बनने वाली बस्ते जैसी आकृति के कारण पड़ा है। विज्ञान के लिए यह प्रजाति नई है। इसकी पहचान चीन में पाए गए सूक्ष्म अवशेषों से की गई थी। ऐसा माना जा रहा है कि यह ड्यूटरोस्टोम का प्राचीनतम उदाहरण है। ड्यूटरोस्टोम एक विस्तृत जैविक श्रेणी है, जिसमें कई उप समूह हैं। इनमें कशेरूकी शामिल हैं। ब्रिटेन की कैंब्रिज यूनिवर्सिटी और चीन की नॉर्थवेस्ट यूनिवर्सिटी का कहना है कि सैकोराइटस प्रजातियों की व्यापक श्रेणी का साझा पूर्वज है। यह विकास पथ का पहला ज्ञात कदम है। (भाषा)

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

प्रस्तुति : किशोर डैनियल

बन्दर की चतुराई

एक राजा का बहुत बड़ा बाग था। उसमें फलों से लदे हरे–भरे पेड़ थे। उस बाग की रखवाली एक माली करता था। उस बाग में एक बन्दर रोज ही आकर उधम मचाता था और कच्चे–पक्के फलों को तोड़–तोड़कर नीचे फेंक देता था। बन्दर की इस हरकत से माली बहुत परेशान हुआ। आखिर उसने एक उपाय किया उसने बड़ा–सा एक पिंजरा बनवाया और उसमें अच्छे–अच्छे खुशबूदार फल डाल दिये। फलों के लालच में बन्दर पिंजरे में चला गया तो माली ने झट से पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

अब बन्दर बहुत घबराया परन्तु उसने चतुराई से काम लिया। उसने माली से कहा– ''अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें एक सोने का हार दूँगा, जिसको मैंने यहाँ से दूर दूसरे बाग में एक पेड़ पर छुपाकर रखा हुआ है। वह हार मैंने दूसरे देश की रानी का चुराया हुआ है। अगर तुम वह हार बेचोगे तो मालामाल हो जाओगे। यह वादा भी करता हूँ कि मैं फिर कभी इस बाग में नहीं आऊँगा और मैं तुम्हें एक बहुत ही सारपूर्ण ज्ञान की बात भी बताऊँगा जिसे तुम जीवन में अपनाओगे तो सुखी हो जाओगे।''

यह सुनकर माली को लालच आ गया और माली ने उसे छोड़ दिया।

बन्दर उछलकर तेज़ी से एक पेड़ पर चढ़ गया और बोला– ''मैंने कोई सोने का हार नहीं छुपा रखा है और सारपूर्ण ज्ञान की बात यह है कि जो वस्तु अपनी न हो और वह नहीं मिले तो उस पर अफसोस नहीं करना चाहिए। अब मैं जा रहा हूँ।''

इसलिए कहा भी है कि लालच से इन्सान हाथ में आई वस्तु को भी खो देता है।

बाल गीत : मंजू दवे

बारिश

रिमझिम–रिमझिम बारिश आई।
सभी जगह हरियाली छाई।
गरमी की हो गई बिदाई।
साथ में ये संदेशा लाई।।

तपती धरती की प्यास बुझी।
जन–जन में मस्ती झूमी।
कोयल कुहू–कुहू कर बोली।
कानों में हैं मिश्री घोली।।

हरे वृक्ष हैं हरे हैं वन।
हरे–हरे दिखते उपवन।
हरियाली की तो बात निराली।
नाच उठा बगिया का माली।।

मेंढक टर्र–टर्र गीत सुनायें।
मोर सजीला नाच दिखायें।
सब बच्चों को सूझ ये आई।
और कागज़ की नाव चलाई।।

रिमझिम–रिमझिम बारिश आई।
सभी जगह हरियाली छाई।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

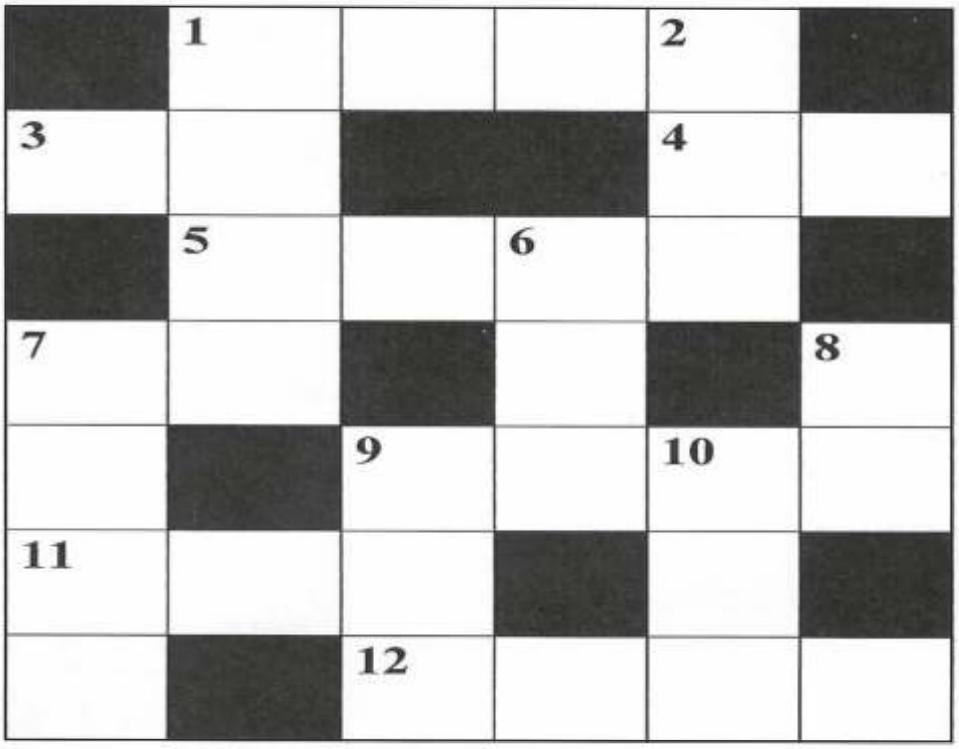

बाएं से दाएं →

1. रावण का पुत्र जिसे इन्द्रजीत भी कहा जाता है?
3. आहार में आयोडीन की कमी से जो रोग हो सकता है। (खांसी / घेंघा)
4. इस वाक्य में छुपे एक गहने का नाम ढूंढ़िए : चूहा रस्सी पर चढ़ रहा है।
5. अंग्रेजों से टक्कर लेने वाली झांसी की रानी।
7. नरेन्द्र मोदी बचपन में अपनी पारिवारिक दुकान में ..... बेचते थे।
9. ईरान देश की राजधानी।
11. कार्तिकेय की माता का नाम।
12. सत्यवती और गंगा में से जो शान्तनु की दूसरी पत्नी थी।

ऊपर से नीचे ↓

1. गारो और खासी किस भारतीय राज्य की मुख्य भाषाएं हैं?
2. तेईस में इकाई पर तीन है और ..... पर दो है।
6. एक दर्जन में कितनी वस्तुएं होती हैं?
7. बेमेल छांटिये : खरबूजा, चारपाई, तरबूज, अमरूद।
8. तलवार को .... में रखा जाता है।
9. जुलाई के कुल दिन जमा दो।
10. कमल का एक पर्यायवाची शब्द।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

कहानी : बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

जम्बो को सीख मिली

जम्बो हाथी की शैतानी से कनकवन के सारे प्राणी परेशान थे। जम्बो आए दिन किसी न किसी जानवर को पकड़कर जमीन पर पटक देता था। छोटे जानवरों के घर तोड़ देता था। इतना ही नहीं जम्बो अपनी ताकत के अहंकार में पेड़–पौधों को भी उखाड़कर फेंक देता था।

एक दिन जम्बो कहीं जा रहा था। तभी रास्ते में एक पेड़ पर चिड़ियों का झुण्ड दिखाई दिया। उस पेड़ पर चिड़ियों के घोंसले भी थे।

चिड़ियां पेड़ की डालियों पर बैठकर खुशी से नाच–गा रही थी। चिड़ियों का नाचना–गाना देखकर जम्बो पेड़ के पास पहुँचा और बोला– 'अरे ओ चिड़ियों तुम सब किस खुशी में नाच–गा रही हो?'

''सावन का महीना आने की खुशी में।'' डाल पर बैठी मैना ने कहा।

अच्छा तो तुम सबने बहुत नाच–गा लिया। अब नाचना–गाना बन्द करो। वर्ना इस पेड़ के साथ तुम सब चिड़ियों के सारे घोंसले गिराकर नष्ट कर दूंगा।

''हम अपना नाचना–गाना क्यों बंद कर दें? तुम कौन होते हो हमारा नाचना–गाना बंद कराने वाले?'' सारी चिड़ियां एक साथ बोल पड़ीं।

इतना सुनकर जम्बो बोला– ''ठहर जाओ अभी दिखाता हूँ, मैं कौन हूँ?'' इतना कहकर जम्बो ने पेड़ को अपनी सूंड से पकड़कर जोर से हिलाया। सारी चिड़ियां तो उड़ गई पर चिड़ियों के अंडे और घोंसले जमीन पर गिरकर नष्ट हो गए।

चिड़ियों के घोंसले नष्ट कर जम्बो बोला– ''अब कभी भी तुम सब जम्बो से अकड़कर बात मत करना। वर्ना अंजाम बुरा होगा।'' इतना कहकर जम्बो आगे की ओर चल दिया।

अब जिधर से भी जम्बो गुजरता कनकवन के सारे छोटे–बड़े जानवर उसे अपनी तरफ आता देखकर डरकर इधर–उधर छुप जाते थे।

एक रोज जम्बो घमण्ड में टहलते हुए तालाब के पास जा पहुँचा। तालाब के किनारे बैठे बहुत सारे मेंढक मस्ती में टर्र–टर्र कर रहे थे। मेंढकों को टर्र–टर्र करते देखकर जम्बो बोल पड़ा– ''अरे ओ मेंढकों, तुम सब किस खुशी में टर्र–टर्र का गाना गा रहे हो?''

''बरसात के आने की खुशी में।'' सारे मेंढक एक साथ बोल पड़े।

अच्छा तो तुम सब अब अपना टर्र–टर्र का राग बन्द करो, वर्ना एक–एक को पैरों से रौंदकर मार डालूंगा। मेरा नाम जम्बो है। मुझसे सारा जंगल डरता है। जो मेरी बात नहीं मानता है उसे मैं खत्म कर देता हूँ। मेरी बात मानकर तुम सब टर्र–टर्र करना बन्द कर दो वर्ना...।

''वर्ना क्या... तुम एक मामूली से हाथी हमारा क्या बिगाड़ लोगे।'' सारे मेंढक एक साथ बोल पड़े।

''तुमने मुझे एक मामूली–सा हाथी कहा। ठहर जाओ, अभी इसका मजा चखाता हूँ। तुम सबको मैं अब जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।'' कहते हुए जम्बो तालाब के पानी में कूद पड़ा।

जिधर से जम्बो तालाब में घुसा था। उधर तालाब में गहरा दलदल और कीचड़ था। जम्बो उसमें धंस गया। जम्बो को दलदल में धंसते देखकर सारे मेंढक ताली पीट–पीटकर हँसने लगे।

जम्बो ज्यों–ज्यों दलदल में से निकलने की कोशिश करता वह त्यों–त्यों दलदल में धंसता गया। अपने को दलदल में फंसा देखकर जम्बो 'बचाओ बचाओ...' चिल्लाने लगा।

जम्बो के चिल्लाने की आवाज सुनकर कनकवन के सारे जानवर और पक्षी तालाब के पास आकर जमा हो गए और कहने लगे ''क्यों जम्बो! मिल गई न तुम्हें घमण्ड की सजा।''

इतना कहकर सारे जानवर और पक्षी ताली पीट–पीटकर जम्बो की हँसी उड़ाने लगे।

जम्बो कीचड़ में फंसा रो–रोकर सारे जानवरों और पक्षियों से कीचड़ से बाहर निकालने की गुहार लगाने लगा और कहने लगा अब मैं कभी भी तुम्हें परेशान नहीं करूँगा।

तभी मेंढक बोल पड़े– ''इस दुष्ट और अत्याचारी जम्बो को कोई नहीं बचाएगा। इसे इसके किए की सजा मिलनी ही चाहिए।''

इस पर चिड़ियों ने कहा, ''इसे अपने किए का पश्चाताप हो रहा है। अब हमें इसकी मदद करनी चाहिए।''

चिड़ियों की बात से अन्य जानवर भी सहमत हो गये। चिड़ियां उड़कर तुरन्त बन्दरों को बुला लाईं। बन्दरों ने पेड़ों की बड़ी–बड़ी डालियां और टहनियां तोड़कर तालाब में डालनी शुरू कर दी और उनसे जम्बो तक जाने का रास्ता बनाया। फिर जम्बो टहनियों पर पैर रखता हुआ बाहर निकल आया।

जम्बो ने भविष्य में कभी किसी जानवर को परेशान नहीं करने की शपथ ली। उसने सोचा सभी प्राणी मिल–जुलकर कर रहें तो किसी भी मुसीबत से छुटकारा पा सकते हैं और अब वह भविष्य में दूसरों जानवरों की मदद करने लगा।

कविता : कल्पनाथ सिंह

घिर आये बादल

ढोल बजाते नाच दिखाते,
परियों सा घिर आये बादल।

कुछ गोरे कुछ काले बादल।
कुछ चंचल कुछ भोले–भाले।
कुछ हाथी सा सूंड उठाये।
गरज रहे बनकर मतवाले।

गुब्बारे सा तोंद फुलाये,
घुमड़–घुमड़ आये बादल।

अपनी–अपनी झोली लेकर।
सागर से पानी भर भरकर।
आसमान में दौड़ रहे हैं।
दाढ़ी वाले जोकर बनकर।

उछल कूद कर गीत सुनाते,
इन्द्र धनुष ले आये बादल।

नई किताबें अपनी लेकर।
लगते हैं स्कूल जा रहे।
उनका भी स्कूल खुला ज्यों।
ऐसे मन में मगन हो रहे।

अपनी टोली संग बतियाते,
झुण्ड–झुण्ड में आये बादल।

संग्रहकर्ता : जगतार : 'चमन'

कभी न भूलो

★ सही अवसर न मिलने पर योग्यता कोई मायने नहीं रखती है।

– नेपोलियन बोनापार्ट

★ सहिष्णुता के अभ्यास में आपका शत्रु ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होता है।

– दलाई लामा

★ जो काम जितना नेकनीयत से किया जाएगा उतना ही बेहतर होगा।

– भगवान बुद्ध

★ अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो।

★ अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव–प्रतिमाएं हैं। उनकी आराधना (पढ़कर ज्ञान अर्जित करना) से तत्काल प्रकाश (ज्ञान) और उल्लास (आनन्द) मिलता है।

★ सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

★ असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

★ बिना ईमानदारी के जीवन के किसी भी क्षेत्र में कामयाब नहीं हो सकते।

★ अगर आप सोचते हैं कि आपको सब कुछ आता है तो यकीन मानिये आपको कुछ नहीं आता।

★ झूठे बहाने नुकसानदेह साबित होते हैं।

★ विश्वास और सच्ची लगन से कार्य करने पर अवश्य सफलता मिलती है।

★ प्रगतिशील विचारधारा वाले लोगों की संगत करें।

★ अगर आप प्रयास करेंगे तो विश्वास मानिये एक दिन आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

★ मैं बहानों में विश्वास नहीं करता। मैं जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए कठिन परिश्रम को प्रमुख कारक मानता हूँ। –'जेम्स कैश पेनी

★ साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं, यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं। – अब्राहम लिंकन

★ बुराई चाहे छोटी ही क्यों न हो उसको बिल्कुल भी अपने पास न आने दें क्योंकि अन्य बड़ी बुराईयां निश्चित रूप से उसके पीछे–पीछे आयेंगी।

– बाल्टासर ग्रेशियन

★ आपका संघर्ष जितना अधिक होगा, आपकी जीत उतनी ही शानदार होगी।

– थॉमस पेन

★ वह नास्तिक है, जो अपने आप में विश्वास नहीं रखता। – स्वामी विवेकानंद

★ हम जिस चीज की तलाश कहीं और कर रहे होते हैं। हो सकता है कि वह हमारे आसपास ही हो। – हार्वी कॉक्स

जानकारी : कमल जैन

खूबसूरत घोंसला

यूं तो चिड़ियों की दुनियाभर में 450 से भी अधिक प्रजातियां मौजूद हैं। कुछ चिड़ियां तो बड़ी ही सुन्दर होती हैं, कुछ बुद्धिमान भी होती हैं। लेकिन प्रकृति की गोद में एक चिड़िया ऐसी भी है जिसे 'प्रकृति का कुशल दर्जी' भी कहा जाता है। इस चिड़िया का नाम है– बया।

बया चिड़िया अपना घोंसला बहुत खूबसूरत बनाती है। इसके निर्माण के लिए यह तिनके, पेड़ के सूखे पत्ते, सन, सूतली के धागे, तरह–तरह की जंगली घास, चिकने पौधों का चिपचिपा दूध, पानी और मिट्टी आदि को दिन–रात एक करके जुटाती है। इस एक घोंसले को यह 10–12 दिनों में पूरा बना लेती है। इस घोंसले की एक खासियत यह है कि यह आसपास से तो भरा–भरा होता है लेकिन अन्दर से बिल्कुल खाली। अन्दर–बाहर आने–जाने के लिए इसकी 'एन्ट्रेस' चिड़िया के आकार तक खुला होता है। इस घोंसले की खूबसूरत बनावट देखकर ऐसा लगता है कि इसे किसी कुशल कारीगर (दर्जी) ने बुना है। यही कारण है कि इसे कुदरत के 'टेलर बर्ड' के नाम से भी जाना जाता है।

इस चिड़िया का विभिन्न देशों की जलवायु के कारण रंगरूप भी भिन्न–भिन्न होता है। अफ्रीका और एशिया में इसका रंग हल्के भूरे रंग का होता है। पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी गर्दन लाल व चोंच नीली–काली होती है, आँखें मोती की तरह चमकती दिखाई देती हैं, परों पर छोटे या चितकबरे निशान होते हैं।

इस चिड़िया की एक अन्य विशेषता है कि यह केवल उन जगहों पर रहना पसंद करती है, जहाँ इसे अपना घोंसला बनाने के लिए मनपसन्द पेड़ आसानी से मिल जाए। घोंसले का निर्माण नर–मादा दोनों ही मिलकर करते हैं। नर घास व तिनके ढूंढ–ढूंढकर लाता है तथा इन्हें एक जगह जमा करता है, फिर मादा भी अन्य चीजें ला–लाकर इसके संग–संग घोंसले का निर्माण शुरू कर देती है। दोनों का यह प्रयास एक शानदार घोंसले के रूप में दिखाई देने लगता है। यह नीड़ एक तरह से मजबूत भी होता है। हवा के तेज झोंके, तेज बरसात, ओले आदि का इस पर एकाएक असर नहीं होता। यह घोंसला डेढ–दो वर्षों तक खराब नहीं होता। फिर इस पक्षी की नई पीढ़ी जवान होकर अपने लिए नये नीड़ का निर्माण करती है।

जानकारी : किरण बाला

अजब अनोखे टॉवर

दुनिया में टॉवरों की कमी नहीं है लेकिन ऐसे टॉवर बहुत कम हैं जो सारी दुनिया का आकर्षण बनते हैं। आइये देखते हैं ऐसे ही कुछ टॉवरों को। दुनिया का सबसे ऊँचा टॉवर ''टोक्यो स्काई ट्री'' मई 2012 में लोगों के देखने के लिए खोला गया। इस टॉवर की ऊँचाई 2080 फीट (634 मीटर) है। 36000 वर्ग मीटर के इलाके में बने इस टॉवर को बनाने में 5.80 लाख लोगों का श्रम लगा तथा कुल 40 अरब डॉलर का खर्च आया। इसे बनाने में टॉवर के निर्माण में अत्याधुनिक निर्माण तकनीक ''स्लिपफार्म कंस्ट्रक्शंन'' का प्रयोग किया गया। इस तकनीक में विशाल संरचनाओं के ढांचे को जैक की सहायता से उठाया जाता है। इस टॉवर की नींव भूकंपरोधी बनाई है। इस टॉवर को रिहाइशी नहीं बल्कि ऑब्जरवेटरी के तौर पर बनाया गया है। इसके डेक तक पहुँचने के लिए हाईस्पीड लिफ्ट लगाई गई है। टॉवर में उच्च शक्ति का डिजिटल प्रसारण एंटीना लगा है जो टीवी सिग्नल देगा। जब यह टॉवर दर्शकों के लिए खोला गया तो 400 कर्मचारी आगंतुकों के स्वागत के लिए थे जिन्हें दो महीने तक ट्रेनिंग दी गई थी। टॉवर में बने शॉपिंग मॉल को देखने के लिए पहले दिन लोगों में काफी उत्सुकता देखी गई। 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में इसे सबसे ऊँचे टॉवर का दर्जा दिया गया है।

स्काई ट्री टॉवर पूर्वी टोक्यो के आसाकुसा जिले के सुमीदा में बनाया गया है। जुलाई 2008 से यह टॉवर बनना शुरू हुआ था जिसे पूरा होने में 44 माह का समय लगा। दुनिया का सबसे ऊँचा टॉवर बनाकर जापान ने एक बार फिर अपनी दृढ़ इच्छा और जोश का परिचय दिया है। यह दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी मानव निर्मित इमारत है। 'बुर्ज

खलीफ़ा' जो कि दुबई में स्थित है। 2717 फीट ऊँची होकर दुनिया की सबसे ऊँची इमारत है।

इसके पूर्व जापान में 2005 में निर्मित टोक्यो टॉवर को सबसे ऊँचा माना जाता था। जिसकी ऊँचाई 1093 फीट थी। मगर गिनीज बुक में सबसे ऊँचे टॉवर के रूप में चीन का ''कैंटन टॉवर'' दर्ज था जिसकी ऊँचाई 1968 फीट (600 मीटर) थी।

सीएन टॉवर टोरन्टो, कनाडा के मेट्रो सेंटर में स्थित एक ऐसा टॉवर है जो बिना किसी बाहरी सहारे के अपने आप खड़ा है। यह 2 अप्रैल 1975 को बनकर तैयार हुआ था। 555.33 मीटर ऊँचे

इस टॉवर में 347.5 मीटर की ऊँचाई पर लगे स्काईपॉड में 416 सीटों की क्षमता वाला एक घूमता रेस्तरां भी है जिससे 120 किलोमीटर की दूर तक की पहाड़ियां दिखाई पड़ती हैं।

एलेक्जेंडर गुस्ताव एफिल द्वारा डिजाइन किया गया पेरिस का एफिल टॉवर विश्वविख्यात है। 300.51 मीटर ऊँचा यह टॉवर 31 मार्च 1889 को बनकर तैयार हुआ था जिसे अब टीवी एंटीना लगाकर 320.75 मीटर ऊँचा कर दिया गया है।

इस टॉवर का वजन 7340 टन है। 1792 सीढ़ियों से युक्त पूर्णतया लोहे का बना यह टॉवर 2 साल, 2 महीने, दो दिन में बनकर तैयार हुआ था।

आलेख : विद्या प्रकाश

नीलकण्ठ विलुप्त होने के कगार पर

पीठ पर नीली धारी तथा नुकीली चोंच वाला खूबसूरत पक्षी नीलकण्ठ आज विलुप्त होने के कगार पर है। आये दिन उसकी संख्या में गिरावट आने से उसके अस्तित्व का गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया है। आबादी से दूर खेत–खलिहान व बाग–बगीचों में रहने वाले इस एकांतप्रिय पक्षी की संख्या आज घट रही है। फल, मक्का, मूंगफली, रोटी, बेर आदि नीलकण्ठ को प्रिय है। फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े–मकोड़ों का आहार करने के कारण इसे किसानों का मित्र कहा जाता है। पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार आजकल कम समय में अधिक से अधिक उत्पाद करने के लोभ में किसान कीटनाशक रसायनों तथा उर्वरकों का बेहिसाब अंधाधुंध इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे उर्वरकों के प्रयोग से फसली उत्पादन में वृद्धि तो हुई मगर यह नीलकण्ठ के लिए जानलेवा साबित हो रहा है। ऐसे कृषि उत्पाद तथा कीड़ा–मकोड़ा खाने से कीटनाशक उर्वरकों का जहर नीलकण्ठ के शरीर में प्रविष्ट हो रहा है तथा यही उसके लिए काल साबित हो रहा है।

इण्टरनेशनल यूनियन फॉर कॉन्जर्वेशन ऑफ नेचर ने लगभग पांच वर्ष पूर्व ही नीलकण्ठ को विलुप्त होने वाली प्रजातियों की डेंजर्ड लिस्ट में शामिल कर लिया था मगर उसके संरक्षण की दिशा में समुचित प्रयास न किये जाने का नतीजा हमारे सामने है। गिद्ध तथा सारस के बाद अब प्रकृति का सुन्दर पक्षी नीलकण्ठ विलुप्ति के कगार पर पहुँच गया है। यदि इस दिशा में हम गम्भीर नहीं हुए तथा उसके संरक्षण हेतु सुनियोजित प्रयास नहीं किया तो आज उसकी जो बची–खुची संख्या धरती पर शेष रह गयी है, वह भी एक दिन हमेशा के लिए मिट जाएगी।

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

आमों का रस

प्यारे आमों की खुशबू ने
ऐसा रंग जमाया,
सब्जी लेने गया था भालू
आम लिए घर आया।

याद रहे ना आलू उसको
याद रही ना गोभी,
लगी आम के आगे फीकी
तरकारी थी जो भी।

मीठे–मीठे आमों का रस
पीकर गाढ़ा–गाढ़ा,
बोला– 'आमों के रस' ने तो
सबका स्वाद पछाड़ा।

तुम भी बच्चों पीयो प्रेम से
आमों का रस मीठा,
गर्मी के मौसम का यह फल
प्यारा और अनूठा।

बाल कविता : सुरेन्द्र रंधावा

आम का बोर

आम का यदि मैं बोर होता,
कभी भी न फिर कमजोर होता।

टहनी को अपनी पकड़ के रखता,
पंखड़ियों को जकड़ के रखता।

मुझे न कोई अलग कर पाता,
हर मौसम हँस के सह जाता।

बन के आम सबको ललचाता,
हर मुख से वाह–वाह कहलाता।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

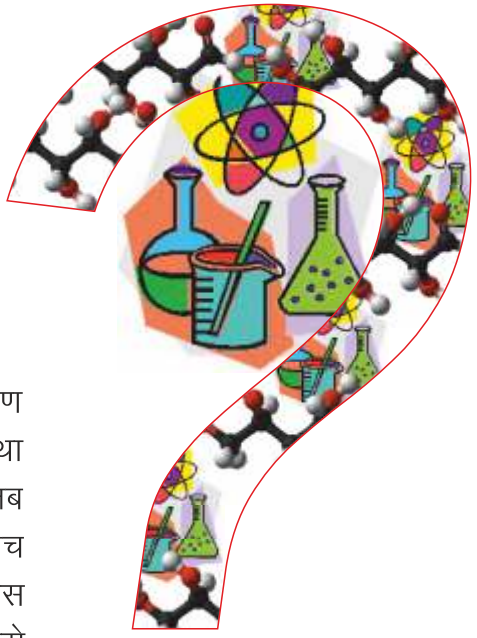

प्रश्न : गीले बालों में कंघी करने पर 'चटचट' की आवाज क्यों नहीं आती है?

उत्तर : जब तुम सूखे बालों में कंघी करते हो तो घर्षण (Friction) पैदा होता है। इस घर्षण से बालों तथा कंघी में एक विपरीत आवेश आ जाता है। जब अधिक मात्रा में आवेश जमा हो जाता है तो बीच की वायु में अत्यधिक तनाव पैदा हो जाता है। इस प्रकार वायु में आवेश का विसर्जन होता है जिससे तुम्हें 'चटचट' की आवाज सुनाई देती है। लेकिन गीले बालों में कंघी करने से यह 'चटचट' की आवाज नहीं आती है। जानते हो क्यों? इसका कारण है– नमी। गीले बालों में पानी की बूंदें जमा होने से घर्षण उत्पन्न नहीं होता जिससे 'चटचट' की आवाज भी नहीं निकलती है।

प्रश्न : बादल क्यों फटते हैं?

उत्तर : जब वातावरण में नमी (Humidity) अधिक होती है और हवा का रुख कुछ ऐसा होता है कि बादल (Clouds) दबाव से ऊपर की ओर उठते हैं, तब हवा की दिशा ऐसी बनती है कि बादल पहाड़ से टकराते हैं और पानी एक साथ बरसता है। इसी को 'बादलों का फटना' कहते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि बादल फटने का मुख्य कारण जंगलों का तेजी से काटना है। वनों के कटने से जब सर्द और गर्म हवाएं विपरीत दिशाओं में चलकर टकराती हैं तो उस परिस्थिति में बादल फट जाते हैं। इसी से पेड़ रहित क्षेत्रों में बाढ़ आने का खतरा भी बराबर बना रहता है।

प्रश्न : पवन क्यों बहती है?

उत्तर : हवा अणुओं की गति से उत्पन्न होती है। ये अणु काफ़ी तेजी से गति करते हैं और धरातल (Surface) पर उपस्थित हर चीज से टकराते हैं। जितने अधिक अणु उतना ही ज्यादा हवा का दबाव। जहाँ तक हवा के बहने का प्रश्न है तो वह ग्रेडियंट दाब पर निर्भर करता है। एक खास क्षैतिज दूरी में हवा के दाब में मौजूद अन्तर हवा के अणुओं को उच्च दाब से निम्न दाब की ओर ले जाने को बाध्य करता है। हवा के दाब का यह अन्तर ही तुम्हें बहने वाली हवा का अनुभव कराता है।

खरगोश की समझदारी

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

चंपकवन में रहने वाले चीकू खरगोश और चमचम चिड़िया बहुत अच्छे दोस्त थे। चीकू काफी छोटा होने के बावजूद बहुत बहादुर था। बड़े से बड़े संकट की स्थिति में वह तनिक भी नहीं घबराता था।

जबकि चमचम चिड़िया डरपोक थी। जरा–सा भी संकट आया नहीं कि डर के मारे थर–थर कांपने लगती थी। चीकू के बिल के पास ही आम का एक बड़ा–सा पेड़ था। चमचम उसकी ऊँची डालों पर ही फुदकती रहती ताकि कोई उसे पकड़ न सके। आम के फलों से ही वह अपना पेट भर लेती। कभी–कभी वह पास वाले नीम के पेड़ पर भी जाती। डर के कारण जमीन पर बहुत कम आती।

लेकिन जब आम व निबौलियों का मौसम न रहता तो चमचम को खाने के लाले पड़ जाते। भूख से उसका बुरा हाल हो जाता। डरते–डरते वह जमीन पर उतरकर भोजन की तलाश में इधर–उधर जाती।

चीकू खरगोश से चमचम की यह हालत देखी न जाती। एक दिन उसने चमचम चिड़िया से पूछ ही लिया– ''तुम हर समय इतनी डरी–डरी क्यों रहती हो?''

चमचम बोली– ''मैं क्या करूँ? इतनी छोटी–सी तो मेरी जान है और इतने बड़े–बड़े जानवर आसपास घूमते रहते हैं। ऐसे में छिपकर रहने के अलावा मैं और कर भी क्या सकती हूँ?''

''सो तो ठीक है, पर इसका मतलब यह तो नहीं कि इन पशुओं के डर से हमेशा अंदर ही छिपे बैठे रहें। यदि हमारे पास साहस हो और उसके साथ अक्ल भी हो तो हम बड़े से बड़े संकट का भी सामना कर सकते हैं।'' चीकू ने कहा।

एक दिन सुबह–सुबह ही चीकू खरगोश बाहर निकलकर घने जंगलों के बीच के खेतों में ताजा रसदार गाजरों का आनंद लेने के लिए जा रहा था कि चमचम बोल उठी– ''चीकू, मुझे भी अपने साथ ले चलोगे?''

''हाँ हाँ, क्यों नहीं? एक से तो दो भले, वैसे भी एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं।'' चीकू ने खुशी से कहा।

चीकू उछलता–कूदता भागता रहा। चमचम साथ–साथ उड़ती रही। दोनों ही घने जंगलों के बीच खो गए। चमचम का मन तो वन की शोभा देखकर खिल उठा। उसने ऐसा सुन्दर दृश्य कभी नहीं देखा था। वह तो आम और नीम के पेड़ को ही पूरा संसार समझती थी।

पेड़ तरह–तरह के मीठे फलों से लदे हुए थे। फलों को देखकर वह अपने आपको न रोक सकी और फुर्र से रसभरी के एक पेड़ पर पहुँच गई और उसके फलों को खाने लगी। इतने मीठे फल तो उसने आज तक कभी नहीं खाए थे।

पास ही एक छोटी–सी पहाड़ी नदी बह रही थी। उसका शीतल जल पीकर वह वहीं आराम करने लगी। घर से काफी दूर निकल जाने के कारण वह थक भी चुकी थी। अतः उसे झपकी आने लगी।

अचानक एक झटके से उसकी नींद खुली तो वह एक खूखांर भेड़िये के पंजे में फंसी छटपटा रही थी। दर्द से उसका बुरा हाल हो रहा था। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगी। उसे लगा कि आज उसका बच पाना संभव नहीं है। यह भेड़िया उसे खा जाएगा।

लेकिन तभी कुछ दूर कुएं की मुंडेर पर बैठे चीकू खरगोश की आवाज उसे सुनाई दी। वह कह रहा था– ''भेड़िये भाई, तुम आखिर इस नन्ही–सी चिड़िया को क्यों मार रहे हो?

इसको खाने से तो तुम्हारी भूख भी शांत नहीं होगी। यह तो तुम्हारे नाश्ते लायक भी नहीं है। यदि तुम चाहो तो मुझे खाकर अपनी भूख शांत कर लो। वैसे भी मैं अपने जीवन से तंग आ चुका हूँ। मैं यहाँ बैठा हूँ, तुम मुझे खा लो, लेकिन चमचम चिड़िया को छोड़ दो। अन्त समय में मैं एक पुण्य तो कर जाऊँगा।''

भेड़िये ने सोचा– ''खरगोश ठीक कह रहा है।''

अचानक उसने चमचम को छोड़कर, बिना कुछ सोचे–समझे खरगोश के ऊपर लम्बी छलांग लगा दी। लेकिन यह क्या, चीकू उछलकर किनारे हट गया और भेड़िया काफी गहरे कुएं में जा गिरा। वह कुएं की दीवारों से इतनी जोर से टकराया कि उसकी आगे की दोनों टांगें टूट गई। वह तमाम कोशिशों के बाद भी बाहर नहीं निकल पा रहा था।

चीकू पास ही खड़ा ताली बजा–बजाकर जोर–जोर से हँस रहा था। डरी–सहमी सी चमचम चिड़िया उसके पास आ गई।

चीकू ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा– ''देखा, साहस और बुद्धि का चमत्कार? मैंने भेड़िये को तुम्हें पंजे में दबोचते हुए देख लिया था। तभी मैं छलांग लगाकर इस कुएं की मुंडेर पर आकर बैठ गया था। मैं जानता था कि वह जैसे ही छलांग लगाएगा, इस गहरे कुएं में जा गिरेगा। और वही हुआ भी। यदि मैं साहस और बुद्धि का उपयोग न कर भाग खड़ा होता तो अपनी प्यारी–सी मित्र चमचम चिड़िया को न खो देता!''

चमचम खरगोश की इस समझदारी पर दंग थी। अब उसके मन का डर भी दूर हो गया था।

बाल कविता : हरजीत निषाद

बादल आये

उमड़–घुमड़ कर बादल आये।
सागर से पानी भर लाये।
खेत गाँव आंगन सब भीगे,
छम छम जल बरसाने आये।

राजू आया रानी आई।
ठण्डी बूंद बनी सुखदाई।
कागज़ की है नाव बन गई,
आओ बैठो बारी आई।

भीगी गलियां डूबी सड़कें।
पानी आया द्वारे घर के।
बारिश में सब खूब नहाते,
उछल कूद करते जी भर के।

चिड़िया छिपी घोंसले में जा।
नहीं आसरा पर बंदर का।
चेतन होता नहीं समय पर,
रहा बाद में नहीं कहीं का।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मम्मी, आज शाम को मैं मौली और चिंटू, मोंटू के घर पढ़ाई करने जा रहे हैं।
ठीक है, लेकिन तुम सब पढ़ाई करना, शरारत मत करना वरना पढ़ नहीं पाओगे।
हम सब आ गए, मोंटू।

किट्टी, चलो सब मिलकर पढ़ाई करते हैं। कोई शरारत नहीं करेगा।
मैं चिंटू की कॉपी छुपा देती हूँ। बड़ा मज़ा आयेगा।
अरे चिंटू तुम अपनी कॉपी नहीं लाए।
अरे, मैं तो अपनी कॉपी लाया था, कहाँ गई?

अरे, ढूँढ़ो कॉपी कहाँ गई?
चलो किट्टी घर चलो। अब बहुत देर हो गई है।
अरे! यह क्या? मैंने तो अपना होमवर्क भी नहीं किया।
अब तो मैडम से मार पड़ेगी। काश! मैं समय बरबाद न करके अपना काम कर लेती।

जानकारीपूर्ण लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

उत्तराखण्ड का राजकीय पशु

कस्तूरी मृग

कस्तूरी मृग एक अत्यन्त प्राचीन वन्य जीव है। इसे 'कस्तूरा', 'मुश्क' आदि नामों से भी जाना जाता है। कस्तूरी मृग हिरन और एन्टीलोप के बीच का प्राणी है। इसके न तो सर पर मृगशृंग (एण्टलर्स) होते हैं और न चेहरे पर ग्रन्थियां होती हैं। अतः कुछ जीव वैज्ञानिक इसे एक अविकसित हिरन मानते हैं। विख्यात रूसी वैज्ञानिक फ्लेरोव ने कस्तूरी मृग को एक विशिष्ट परिवार मोस्कीडीर का सदस्य माना है क्योंकि इसके पित्ताशय होता है, मादा के दो स्तन होते हैं एवं नर की नाभि के पास एक विशिष्ट प्रकार की सुगन्धित द्रव वाली ग्रन्थि होती है। ये तीनों विशेषताएं हिरनों में नहीं पायी जातीं।

कस्तूरी मृग दक्षिण तथा मध्य एशिया में हिमालय पर्वत पर 2400 मीटर से लेकर 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में देखने को मिलता है। भारत में यह कश्मीर, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, असम तथा उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाता है। भारत के साथ ही साथ यह रूस, चीन, मंगोलिया, बर्मा, भूटान, तिब्बत, नेपाल तथा कोरिया आदि में भी देखने को मिलता है।

कस्तूरी मृग शर्मीला और एकान्त में रहने वाला हिरन है। यह पर्वतीय क्षेत्रों में काफी ऊँचाई पर पाये जाने वाले भोज वृक्षों के जंगलों में अथवा ऊँचे–ऊँचे वृक्षों से ढँकी पहाड़ी चट्टानों के बीच में अपना निवास बनाता है। सर्दियों में यह पहाड़ से नीचे उतर आता है।

कस्तूरी मृग एक छोटा हिरन है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई 40 सेंटीमीटर से लेकर 55 सेंटीमीटर तक वजन 9 किलोग्राम से 13 किलोग्राम तक होता है। इसका अगला भाग छोटा एवं कमजोर तथा पिछला भाग अधिक मजबूत तथा तुलनात्मक रूप से भारी होता है, अतः पीछे से यह अधिक ऊँचा दिखायी देता है। कस्तूरी मृग का रंग हल्के बादामी, भूरे से लेकर हल्की लाली लिये हुए सुनहरा तक होता है और पीठ पर हल्के तथा गहरे भूरे रंग के धब्बे होते हैं। इसके पूरे शरीर पर छोटे–छोटे, कड़े और घने बाल होते हैं एवं पूंछ बहुत छोटी होती है। नर कस्तूरी मृग की पूंछ बाल रहित होती है जबकि मादा की पूंछ पर घने बाल होते हैं। कस्तूरी मृग के खुर लम्बे और नुकीले होते हैं। इसकी पिछली टांगे अगली टांगों से लम्बी, मोटी और मजबूत होती हैं तथा चलते और दौड़ते समय मुड़ी हुई–सी दिखायी पड़ती हैं। इनकी संरचना इस प्रकार की होती है कि यह बर्फीली चट्टानों, खाइयों, फिसलन भरी ढलानों आदि पर सरलता से भाग सकता है। यह बड़ी आसानी से सीधी चढ़ाई चढ़ जाता है और उतर आता है।

कस्तूरी मृग का सर इसके शरीर की तुलना में छोटा होता है। इसका मुँह आगे की ओर निकला हुआ होता है एवं कान बड़े और लम्बे होते हैं। कस्तूरी मृग के मृगशृंग नहीं होते किन्तु इनकी कमी को इसके हाथी के समान बाहर निकले हुए दो कैनाइन दांत पूरी करते हैं। ये दांत ऊपरी जबड़े के नीचे होते हैं तथा नर और मादा दोनों में पाये जाते हैं। मादा के दांत छोटे होते हैं जबकि नर के दांतों की लम्बाई 10

सेंटीमीटर तक हो सकती है। नर कस्तूरी मृग के कैनाइन दांत लम्बे, पतले, नुकीले और बाहर की ओर निकले हुए होते हैं। इनका उपयोग यह सुरक्षा के लिये करता है। इसके कैनाइन दांतों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इनका स्थान परिवर्तनशील होता है अर्थात् कस्तूरी मृग अपने जबड़े की मांसपेशियों की सहायता से अपना मुँह खोलकर इनका स्थान बदल सकता है।

कस्तूरी मृग की तीन जातियां पायी जाती हैं। साइबेरिया का कस्तूरी मृग, पहाड़ी का कस्तूरी मृग तथा बौना कस्तूरी मृग। इन तीनों के आकार एवं व्यवहार में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है।

साइबेरिया का कस्तूरी मृग सबसे बड़ा और भारी होता है। इसकी कंधे तक की ऊँचाई 55 सेंटीमीटर तक एवं वजन 13 किलोग्राम तथा शरीर का रंग भूरा होता है। साइबेरिया के कस्तूरी मृग के शरीर पर लम्बे और घने बाल होते हैं। साइबेरिया का कस्तूरी मृग 3500 मीटर से 4500 मीटर तक की ऊँचाई वाले और इसके आसपास के पर्वतीय जंगलों में पाया जाता है। सर्दियों में यह पर्वतीय ढलान के ऐसे भाग में आ जाता है, जहाँ बर्फ कम एकत्रित होती है।

पहाड़ी कस्तूरी मृग मध्यम आकार का होता है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई 45 सेंटीमीटर से 50 सेंटीमीटर तक एवं शरीर का रंग हल्का भूरा होता है। इसका मुँह नुकीला एवं टांगें छोटी और मजबूत होती हैं। पहाड़ी कस्तूरी मृग नेपाल और तिब्बत में, हिमालय पर्वत के 3000 मीटर से 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में पाया जाता है।

बौना कस्तूरी मृग सबसे छोटा होता है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई 40 सेंटीमीटर से लेकर 45 सेंटीमीटर तक एवं शरीर का रंग हल्का भूरापन लिये सुनहरा–सा होता है। इसका मुँह छोटा और आगे की ओर निकला हुआ होता है एवं शरीर का पिछला भाग अगले भाग की तुलना में भारी और मजबूत होता है। बौना कस्तूरी मृग पहाड़ी कस्तूरी मृग के समान पर्वतीय जंगलों में 3000 मीटर से 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में पाया जाता है। कुछ जीव वैज्ञानिक पहाड़ी कस्तूरी मृग और बौने कस्तूरी मृग को अलग–अलग जातियों का नहीं मानते, बल्कि एक ही जाति की दो उपजातियाँ मानते हैं।

कस्तूरी मृग निशाचर है। यह दिन के समय घने जंगलों से ढँकी हुई पहाड़ी चट्टानों की दरारों में आराम करता है और रात्रि में भोजन की खोज में निकलता है। इसका प्रमुख भोजन विभिन्न प्रकार के फल–फूल तथा पत्तियां, छोटी–छोटी पत्तियों वाले पौधे, भोजपत्र की

झाड़ियां, विभिन्न प्रकार की जंगली वनस्पतियां तथा पहाड़ों पर पायी जाने वाली काई आदि हैं। सर्दियों में यह पतली बर्फ की पर्तवाले स्थानों की खोज करता है और बर्फ की पर्तों को उखाड़कर या तोड़कर उसके नीचे की पत्तियां, फल–फूल, घास आदि खाकर सर्दियां बिताता है। यदि बर्फ की पर्त मोटी होती है तो केवल पहाड़ी काई खाकर यह अपनी भूख मिटाता है। यह कभी–कभी झुकी हुई डालियों वाले वृक्षों पर भी चढ़ जाता है और पत्तियां आदि खाता है। कस्तूरी मृग अन्य बहुत से वन्य जीवों के समान नमकीन मिट्टी चाटने का शौकीन होता है।

कस्तूरी मृग एक अच्छा तैराक है, किन्तु यह पानी से दूर ही रहना पसन्द करता है। इसके शरीर, पैरो और खुरों की संरचना इस प्रकार की होती है कि यह बर्फ पर भी सरलता से दौड़ सकता है।

नर कस्तूरी मृग की नाभि के पास बड़े नींबू के आकार की एक ग्रन्थि होती है, जिसमें कस्तूरी रहती है। इसे नाभा या मृगनाभि कहते हैं। इसी मृगनाभि के कारण कस्तूरी मृग का इतना अधिक शिकार किया गया है कि यह विलुप्ति के कगार पर पहुँच गया है। कस्तूरी मृग की मृगनाभि का आकार उसकी आयु के अनुसार बढ़ता है। एक वयस्क कस्तूरी मृग की मृगनाभि लगभग तीन सेंटीमीटर तक मोटी और पाँच से आठ सेंटीमीटर तक लम्बी और गोलाई लिये हुए होती है। इस पर मुलायम और रेशेदार बाल होते हैं तथा एक सिरे पर छोटा–सा छेद होता है। इसे काटकर सुखाने पर इसका भार 20 ग्राम से 50 ग्राम तक रह जाता है। मृगनाभि में कत्थई रंग का गाढ़ा द्रव पदार्थ भरा रहता है। आरम्भ में यह तेज, तीखा और मूत्र की तरह दुर्गन्धयुक्त होता है, किन्तु सूखने के बाद इसमें सुगन्ध उत्पन्न हो जाती है। प्रायः एक मृगनाभि से पाँच ग्राम से लेकर पन्द्रह ग्राम तक कस्तूरी प्राप्त होती है। कस्तूरी एक मूल्यवान पदार्थ है। कस्तूरी का उपयोग विभिन्न प्रकार के कीमती इत्र, साबुन और शक्तिवर्धक दवायें बनाने में किया जाता है। चीन में इससे शक्तिवर्धक तथा दर्दनाशक दवायें तैयार की जाती हैं।

कस्तूरी मृग इस समय विलुप्ति के कगार पर हैं। इनका एक लम्बे समय से बड़ी संख्या में शिकार किया जा रहा है। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक एशिया के विभिन्न देशों– रूस, चीन, भारत, बर्मा आदि से 1500 किलोग्राम कस्तूरी प्रतिवर्ष यूरोप तथा खाड़ी के देशों को निर्यात की जाती थी, अर्थात् पचास हजार से पचहत्तर हजार तक कस्तूरी मृग प्रतिवर्ष मारे गये। एक समय था जब उत्तरप्रदेश के अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, उत्तरकाशी, चमोली आदि क्षेत्रों में काफी संख्या में कस्तूरी मृग पाये जाते थे, किन्तु अब उत्तरकाशी और चमोली को छोड़कर शेष सभी भागों से ये समाप्त हो गये हैं।

कस्तूरी मृग की घटती हुई संख्या को देखते हुए भारत सरकार ने भी सन् 1972 में केदारनाथ वन मण्डल के अन्तर्गत 9672 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में कस्तूरी मृग अभयारण्य बनाया है तथा कस्तूरी मृग को 'रेड डाटा बुक' में संकटग्रस्त प्राणी के रूप में शामिल किया है। इसके साथ ही कश्मीर, दार्जिलिंग, अल्मोड़ा एवं नंदादेवी आदि राष्ट्रीय उद्यानों में कस्तूरी मृग के पालन और प्रजनन के प्रयास आरम्भ किये गये हैं। यदि ये प्रयास सफल हो जाते हैं तो कस्तूरी मृगों को बचाया जा सकेगा।

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

इन्द्रधनुषी छटा सुहानी

इन्द्रधनुषी छटा सुहानी।
लेकर आई वर्षा रानी।
बादल दौड़े धन दे दानी।
खेती बाड़ी रानी धानी।

भरी नदी और ताल तलैया
पानी दर्पण लहर लहरिया।
टर्र–टर्र मेंढक मछली भईया
बीच धार में तैरे नइया।।

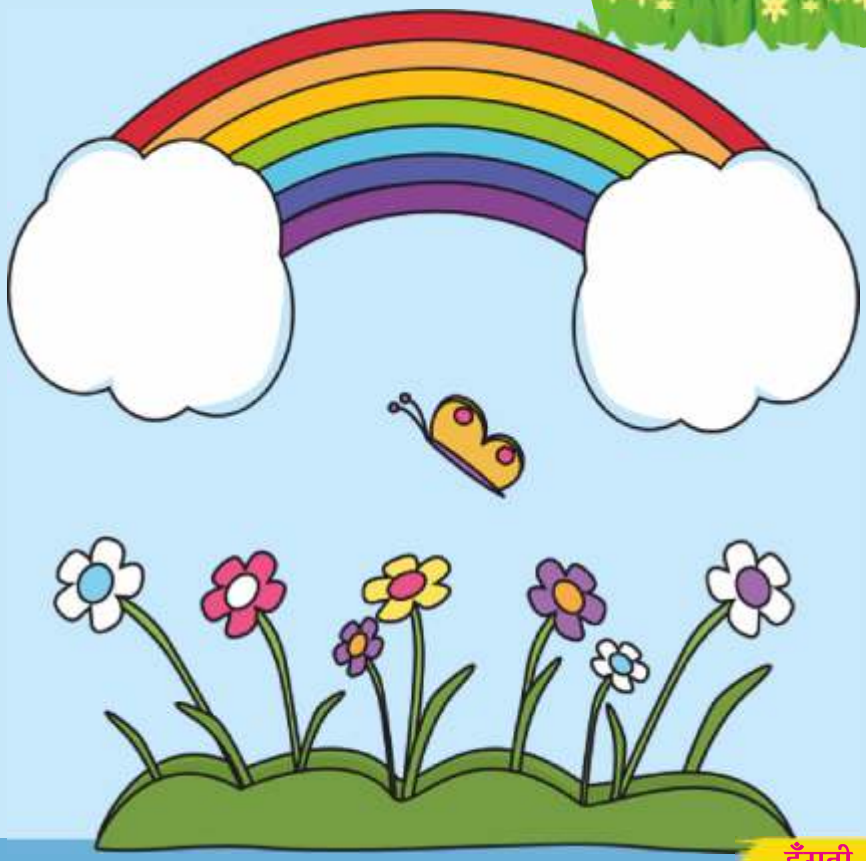

नीला नीला भरा समंदर
फूल खिले बाहर अंदर।
भौरें तितली मस्त कलंदर
घर से बेघर भीगे बंदर।

खेत खेत फूली फसलें,
जंगल हरिमा से लद चले।
हरियाली से खुशी निकले
आओ अन्न धन लाद चलें।

चौमासे में कई त्योहार
मिल मनाएं सब त्योहार।
जीत नहीं कोई न हार।
बांधे हैं एक ही कतार।

गुदड़ी के लाल

अनमोल उम्मुल का सिविल सर्विस पास करने का संघर्ष भरा सफर

उम्मुल खेर जैसी देश को गौरवान्वित करने वाली बेटियों की जितनी भी प्रशंसा की जाए, उतनी ही कम है। ऐसी योग्य और संघर्षशील बेटियां समाज में बहुत कम होती हैं। एक ऐसी ही बेटी जो पैदा तो विकलांग हुई लेकिन इस विकलांगता को अपनी ताकत बनाते हुए सफलता की सीढ़ियां चढ़ती चली गई। एनडीटीवी से बात करते हुए उम्मुल ने अपने संघर्ष की कहानी बताई। उम्मुल का जन्म राजस्थान के पाली मारवाड़ में हुआ। उम्मुल 'अजैले बोन डिसऑर्डर' बीमारी के साथ पैदा हुई थी। यह एक ऐसा बोन डिसऑर्डर है जो बच्चे की हड्डियां कमजोर कर देता है। हड्डियां कमजोर हो जाने की वजह से जब कभी बच्चा गिर जाता है तो फ्रैक्चर होने की बहुत ज्यादा संभावना रहती है। इसी वजह से 28 साल की उम्र में उम्मुल को 15 से भी ज्यादा बार फ्रैक्चर का सामना करना पड़ा। कठिन हालातों से जूझते हुए उम्मुल ने सिविल सर्विस की परीक्षा पास कर 420वीं रैंक हासिल की है।

बचपन निजामुद्दीन(दिल्ली) की झुग्गी में बीता

पहले दिल्ली में निजामुद्दीन के पास झुग्गियां हुआ करती थी। उसी झुग्गी वाले इलाके में उम्मुल का बचपन बीता। उम्मुल के पापा सड़क के फुटपाथ पर मूंगफली बेचा करते थे। 2001 में झुग्गियां टूट गईं, फिर उम्मुल और उसका परिवार दिल्ली के ही त्रिलोकपुरी इलाके में चला गया। त्रिलोकपुरी में किराये के मकान में रहे। उस वक्त उम्मुल सातवीं कक्षा की छात्रा थी। घर में पैसा नहीं हुआ करता था। उम्मुल के परिवार के लोग नहीं चाहते थे कि उम्मुल आगे पढ़ाई करे लेकिन उम्मुल अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती थी। इस वजह से अपना खर्चा उठाने के लिए उम्मुल ने आसपास के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया। उस समय उसे एक बच्चे को पढ़ाने के लिए सिर्फ 50 से 60 रुपया मिलता था।

शुरुआत में विकलांग बच्चों के स्कूल में हुई पढ़ाई

आठवीं कक्षा में उम्मुल स्कूल की टॉपर थी। फिर स्कॉलरशिप के जरिये दाखिला एक प्राइवेट स्कूल में हुआ। दसवीं में उम्मुल

के 91 प्रतिशत अंक थे। 12वीं क्लास में उम्मुल के 90 प्रतिशत अंक थे। 12वीं के बाद उम्मुल ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के गार्गी कॉलेज में साइकोलॉजी में ग्रेजुएशन किया। उम्मुल जब गार्गी कॉलेज में थी तब अलग–अलग देशों में दिव्यांग लोगों के कार्यक्रम में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 2011 में उम्मुल सबसे पहले ऐसे कार्यक्रम के तहत दक्षिण कोरिया गई। दिल्ली यूनिवर्सिटी में जब उम्मुल पढ़ाई करती थी तब भी बहुत सारे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती थी। उम्मुल दिन में तीन बजे से लेकर रात को ग्यारह बजे तक ट्यूशन पढ़ाती थी। अगर उम्मुल ट्यूशन नहीं पढ़ाती तो वह घर का किराया और खाने–पीने का खर्चा भी नहीं निकाल पाती। ग्रेजुएशन के बाद उम्मुल को साइकोलॉजी विषय छोड़ना पड़ा। दरअसल साइकोलॉजी में इंटर्नशिप होती थी। उम्मुल अगर इंटर्नशिप करती तो ट्यूशन नहीं पढ़ा पाती। फिर उम्मुल का जे.एन.यू. में मास्टर ऑफ आर्ट्स के लिए एडमिशन मिल गया। उम्मुल ने साइकोलॉजी की जगह इंटरनेशनल रिलेशंस चुना।

जे.एन.यू. में उम्मुल को हॉस्टल मिल गया। जे.एन.यू. के हॉस्टल का चार्ज कम था। अब उम्मुल को ज्यादा ट्यूशन पढ़ाने की जरूरत नहीं थी। एम.ए. पूरा करने के बाद उम्मुल ने जे.एन.यू. में एम.फिल. में दाखिला लिया। 2014 में उम्मुल का जापान के इंटरनेशनल लीडरशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम के लिए चयन हुआ। विगत 18 साल में सिर्फ तीन भारतीय इस प्रोग्राम के लिए 'सलेक्ट' हो पाए थे और उम्मुल ऐसी चौथी भारतीय थी जो इस प्रोग्राम के लिए 'सलेक्ट' हुई। फिर उम्मुल एक साल की छुट्टी लेकर इस प्रोग्राम के लिए जापान चली गई। इस प्रोग्राम के जरिये उम्मुल दिव्यांग लोगों को यह सिखाती थी कि दिव्यांगता के बावजूद कैसे एक इज्ज़त की जिंदगी जी जाए। एक साल के ट्रेनिंग प्रोग्राम के बाद उम्मुल भारत वापस आई और अपनी एम.फिल. की पढ़ाई पूरी की।

एम.फिल. करने के साथ–साथ उम्मुल ने जे.आर.एफ. भी किया। अब उम्मुल को पैसे मिलने लगे और पैसे की समस्या लगभग खत्म हो गई। एम.फिल. पूरा करने के बाद उम्मुल ने जे.एन.यू. में पी.एच.डी. में दाखिला लिया। जनवरी 2016 में उम्मुल ने आई.ए.एस. के लिए तैयारी शुरू की और अपने पहले प्रयास में ही सिविल सर्विस की परीक्षा पास कर 420वीं रैंक हासिल की।

एक पुरानी कहावत है कि 'गुदड़ी में भी लाल होते हैं।' इस कहावत को उम्मुल ने चरितार्थ कर दिखाया है। उम्मुल के संघर्षपूर्ण जीवन से हमें यही शिक्षा मिलती है कि जीवन में अभाव रह सकते हैं, परिस्थितियां विपरीत भी हो सकती हैं लेकिन इन सबसे घबराकर बैठ नहीं जाना है। अपना संघर्ष जारी रखना है। हिम्मत न हारने वालों ने ही जीवन में गौरवशाली सफलताएं हासिल की हैं। (एनडीटीवी से साभार)

पढ़ो और हँसो

भिखारी : साहब, पांच रुपये दे दीजिए। चाय पी लूँगा।

चाय पीने के बाद भिखारी बोला– साहब! भूख लगी है एक समोसा भी खिला दीजिए।

राहगीर : तुम्हें एक बार में ही मांग लेना चाहिए।

भिखारी : ठीक है साहब तो फिर दस रुपये का एक नोट दे दीजिए।

✯ ✯ ✯ ✯ ✯ ✯

एक ग्रामीण जो अनपढ़ था और धोती पहनता था। शहर की बड़ी–बड़ी इमारतों को देखते हुए सामने से आ रही एक महिला से टकरा गया।

महिला ने कहा– आई. एम. सॉरी।

ग्रामीण ने समझा कि महिला अपनी साड़ी के बारे में बतला रही है, इसलिए उसने भी अपने कपड़ों के बारे में कहा– आई. एम. धोती।

✯ ✯ ✯ ✯ ✯ ✯

सुप्रभ : (अपनी बहन अदिति से) आजकल मेरी जिन्दगी में सब कुछ उलटा चल रहा है।

अदिति : लेकिन भईया, मुझे तो आप सीधे चलते हुए ही दिखाई पड़ते हैं।

भिखारी : साहब, परिवार से बिछुड़ गया हूँ, मिलने के लिए 100 रुपये चाहिएं।

साहब : कहाँ है तेरा परिवार।

भिखारी : सिनेमा हॉल में फिल्म देख रहा है।

✯ ✯ ✯ ✯ ✯ ✯

सोनू : सुना तुमने? एक आदमी भैंस का दूध पीते–पीते मर गया।

पप्पू : वह कैसे?

सोनू : क्योंकि उसी समय उस पर भैंस बैठ गई।

✯ ✯ ✯ ✯ ✯ ✯

माँ : पप्पू बेटा क्यों रो रहे हो? (पप्पू और जोर–जोर से रोने लगा तभी पप्पू के पापा आ जाते हैं।)

पप्पू के पापा : अरे, पप्पू की माँ पप्पू क्यों रो रहा है?

माँ : मेरे पूछने पर और जोर–जोर से रो रहा है, आप ही पूछ लो।

पप्पू के पापा : बेटा, पप्पू क्यों रो रहे हो?

पप्पू : आप दोनों की शादी की फोटो में मेरा फोटो क्यों नहीं है?

– अमित कुमार (दरभंगा)

(किरन अपनी छोटी बहन पुनीता के घर अपने सात बच्चों के साथ 10 दिन के लिए शहर घूमने गयी थी। आज वापस जाते समय पुनीता के पति ने जल्दी से कार बाहर निकाली स्टेशन छोड़ने के लिए।)

किरन : आप इतना कष्ट क्यों कर रहे हैं, हम बस से चले जाएंगे।

पुनीता के पति : हमें आज बेहद खुशी हो रही है। चलिए आपको जल्दी से स्टेशन पहुँचा देता हूँ। कष्ट तो तब होगा जब ट्रेन छूटने पर आप वापस चली आयेंगी।

★ ★ ★ ★ ★ ★

अमन : (राहुल से) वह कौन सा गेट है, जिसमें हम प्रवेश नहीं कर सकते?

राहुल : कोलगेट।

★ ★ ★ ★ ★ ★

ग्राहक : यह मच्छरदानी कितने की है?

दुकानदार : सौ रुपये की। इसमें कोई मच्छर नहीं घुस सकता।

ग्राहक : मुझे नहीं लेनी। जब इसमें मच्छर नहीं घुस सकता तो मैं कैसे घुस सकता हूँ?

★ ★ ★ ★ ★ ★

महेश : सबसे पहली सुरंग किसने बनाई?

सुरेश : चूहों ने।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

★ ★ ★ ★ ★ ★

यात्री : (तांगे वाले से) स्टेशन तक का कितना लोगे?

तांगेवाला : दस रुपये और सामान मुफ्त ले चलूंगा।

यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो। मैं पैदल आता हूँ।

★ ★ ★ ★ ★ ★

राजेश : (सुशील से) यार! आज तो सारा पेपर ही खाली ही दे आया हूँ। एक भी प्रश्न मैंने हल नहीं किया।

सुशील : मूर्ख ये क्या किया तूने। अब निरीक्षक यही सोचेंगे कि तुमने मेरी नकल की है।

★ ★ ★ ★ ★ ★

माधुरी : चलो सीमा तैरने चलें।

सीमा : माधुरी मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक तैरना न सीख लूँगी पानी के पास नहीं जाऊँगी।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

वर्ग पहेली के उत्तर

	1 मे	घ	ना	2 द	
3 घें	घा			4 हा	र
	5 ल	क्ष्मी	6 बा	ई	
7 चा	य		र		8 म्या
र		9 ते	ह	10 रा	न
11 पा	र्व	ती		जी	
ई		12 स	त्य	व	ती

कहाँ से आते हैं आसमान में इतने रंग?

जानकारी : अर्चना जैन

दोस्तों! तुमने बरसात के मौसम में रंग–बिरंगी आभा वाला 'सतरंगा इन्द्रधनुष' तो जरूर देखा होगा। लेकिन तुमने कभी सोचा है यह आसमान में बनता कैसे है? कहाँ से आसमान में इतने रंग आते हैं, जो दूर–दूर तक इन्द्रधनुष की पट्टी को पोत देते हैं? आओ, रिमझिम के इस हसीन मौसम में तुम्हें बताते हैं– 'इन्द्रधनुष' बनता कैसे है?

वर्षा के मौसम में आसमान में पानी की नन्हीं–नन्हीं बूंदें मौजूद रहती हैं। पानी की इन बूंदों में से जब सूरज की सफेद किरणें गुजरती हैं तो वे सात रंगों में बंट जाती हैं। हाँ, जब श्वेत किरणें विशाल रूप से सतरंगी किरणों में टूटती हैं तो वह हमें आसमान का सतरंगा हार यानी इन्द्रधनुष के रूप में दिखाई देती है।

यह एक अचरज की बात है– इन्द्रधनुष हमेशा सूरज की विपरीत दिशा में ही दिखाई देता है। इसमें दिखाई देने वाले सात रंग हमेशा एक क्रम में ही होते हैं। पहले बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और अन्त में लाल।

बरसात के दिनों जब आसमान में इन्द्रधनुष का हसीन नज़ारा दिखाई दे तो इसे अपने घर की ऊँची छत से निहारें। लोकजीवन में ऐसी धारणा है कि वर्षा में इन्द्रधनुष निहारने से आँखों की रोशनी में वृद्धि होती है तथा स्मरण शक्ति तेज होती है।

अफ्रीका की धरती पर एक पौधा ऐसा भी है। जिसमें इन्द्रधनुष की आकृति का फूल खिलता है तथा पुष्प में इन्द्रधनुष की भांति सुन्दर–सुन्दर रंगों की रचना होती है। इस फूल को वैज्ञानिक भाषा में 'रेनबो' के नाम से जाना जाता है। इस फूल में मनमोहक भीनी–भीनी खुशबू भी होती है। यह फूल अक्सर जुलाई से सितम्बर के मध्य ही खिलता है।

और, यह भी जान लें जहाँ दूर–दूर तक हरे–भरे घने जंगल फैले होते हैं। वहाँ के आसमान में छोटे–छोटे हरे रंग के इन्द्रधनुष कुदरती बनते हैं। इन इन्द्रधनुष को कई स्थलों पर 'इन्द्रदेव' के पेड़–पौधों के नाम से जाना जाता है।

इन्द्रधनुष हमें यह शिक्षा देता है– अपने जीवन में सात रंग भरो और जीवन में खुशियों के सतरंगें रंग बांटो और खुशहाली के मधुर गीत गुनगुनाओ।

प्रेरक–प्रसंग : दिनेश दर्पण

विनम्रता की ताकत

एक बार नदी को अपने पानी के प्रचण्ड प्रवाह पर घमण्ड हो गया। नदी को लगा कि मुझमें इतनी ताकत है कि मैं पत्थर, मकान, पेड़, पशु, मानव आदि सभी को बहाकर ले जा सकती हूँ। नदी ने बड़े ही गर्वीले और अहंकारपूर्ण शब्दों में समुद्र से कहा– बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या बहाकर लाऊँ? जो भी तुम चाहो मकान, वृक्ष, पत्थर, पशु, मानव आदि जो तुम चाहो। उसे मैं जड़ से उखाड़कर ला सकती हूँ।

समुद्र समझ गया कि नदी को अहंकार हो गया है। उसने नदी से कहा– यदि तुम मेरे लिए कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी–सी नर्म घास (दूब) उखाड़कर ले आओ।

समुद्र की बात सुनकर नदी बोली– बस! इतनी–सी बात है। अभी आपकी सेवा में हाजिर करती हूँ। नदी ने अपने जल का पूरा वेग घास पर लगाया। पर घास नहीं उखड़ी। नदी ने एक बार, दो बार, तीन बार ... अनेक बार जोर लगाया। सभी प्रयत्न किये, पर बार–बार प्रयत्न करने पर भी कोई सफलता नहीं मिली। आखिर हारकर समुद्र के पास पहुँची और बोली– मैं मकान, वृक्ष, जीव–जन्तु तो बहाकर ला सकती हूँ, पर नर्म घास को उखाड़कर नहीं ला सकती। जब भी मैंने घास उखाड़ने के लिए पूरा वेग लगाकर उसे उखाड़ने का प्रयास किया तो वह नीचे की ओर झुक जाती है, और मैं खाली हाथ उसके ऊपर से गुजर जाती हूँ।

समुद्र ने नदी की पूरी बात सुनी और कुछ देर विचार किया और फिर मुस्कुराते हुए बोला– जो पत्थर या वृक्ष जैसे कठोर होते हैं, वे आसानी से उखाड़े जाते हैं किन्तु घास जैसी विनम्रता जिसने सीख ली हो, उसे कोई प्रचण्ड वेग भी उखाड़ नहीं पाता।

नदी ने समुद्र की सारी बातें धैर्यपूर्वक सुनीं और समझीं। समझ में आने पर नदी का घमण्ड चूर–चूर हो गया।

मई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **धैर्य गड़ाही** 9 वर्ष
शिवकृपा अपार्टमेंटस,
आकशदीप कालोनी,
देहरादून (उत्तराखण्ड)

2 **सेफाली कुमारी** 13 वर्ष
गाँव : सुरैला,
जिला : बस्ती (यू.पी.)

3 **मोनिशका खन्ना** 13 वर्ष
2क–18, हॉऊसिंग बोर्ड,
अलवर (राज.)

4 **शगुन** 14 वर्ष
पुलिस लाइन,
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

5 **वंशिका वर्मा** 8 वर्ष
333, सेक्टर–5,
कुरूक्षेत्र (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सुहावनी, शुभम (मोतियाखान, दिल्ली), आशिता (विकासपुरी, दिल्ली), प्रेमप्रकाश (सरदार शहर), आरती (भटिण्डा), पलक (चण्डीगढ़), अनिरूद्ध (कांगड़ा), पायल, सिम्मी (गोधरा), जयंत कुमार (नवापारा, राजिम), अर्पित (अजय नगर, अजमेर), वंश कुमार (बडेरी), महक (झाकड़ी, शिमला), अमन (भरजवाणु, मण्डी), नवदिशा (बक्करवाला, दिल्ली), पावनी (द्वारका, दिल्ली), पीयूष (बिन्नागुड़ी, जलपाईगुड़ी), समता (बोईसर, पालघर), निधि (विरार, पालघर), निहारिका (गीता कालोनी, दिल्ली), नितिन (ढाडा, जालंधर), अद्वितीय (सुन्दर नगर, अजमेर), जगदीप सिंह (राणा प्रताप बाग, दिल्ली), सुदीक्षा (सचेंडी, कानपुर)।

जुलाई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 जुलाई तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) सितम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

दूर दूर देशों में जाती।
ज्ञान बढ़ाती हँसती दुनिया।
नवजीवन में नया।
उत्साह जगाती हँसती दुनिया।
प्यार करना एक दूजे संग।
हमें सिखाती हँसती दुनिया।
दुर्विकार अन्तर्मन से।
दूर भगाती हँसती दुनिया।
शिक्षापूर्ण पाठों से ।
भरी पड़ी हँसती दुनिया।
हर माह नई जानकारी।
लेकर आती हँसती दुनिया।
हर मन को प्यारी प्यारी।
लगती है हँसती दुनिया।
पत्रिकाओं में अति उत्तम।
बाल पत्रिका हँसती दुनिया।

– रामअवध राम (गुरैनी)

बादल भैया आये

टप टप टप टप पानी बरसा,
बादल भैया आये।
कूक रही कोयल मतवाली,
पंचम सुर में गाये।
रामू, श्यामू दौड़ लगाते,
भीगे भीगे आये।
दादी बोली सुन लो बेटा,
छाता हमें बचाये।
दादाजी की मित्र छड़ी है,
दूर उन्हें ले जाये।
टप टप टप टप पानी बरसा,
पेड़ खूब हर्षाये।

– राजेंद्र निशेश

रिमझिम जल बरसाओ

आओ बादल आओ,
रिमझिम जल बरसाओ।
सारी धरती प्यासी है,
सबकी प्यास बुझाओ।
उमड़–घुमड़कर आसमान में,
आ करके छा जाओ।
काला–काला भूरा–भूरा,
अपना रूप दिखाओ।
पेड़ों की हर डाली को,
आकर खूब नहवाओ।
ताल पोखरा और नदी में,
खूब जल भर जाओ।
सूरज की गर्मी को,
आकर कम कर जाओ।
बच्चे बड़े सब खुश हो जाए,
सबका मन हर्षाओ।
खेतों में हरियाली,
आ करके भर जाओ।
मोर पपीहा और किसान को,
खूब खुशी दे जाओ।

– बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)